चतुर्थ खण्ड

गोपथ-ब्राह्मण एवं सामवेदीय ब्राह्मण

खण्ड चार का परिचय

अथर्ववेदीय गोपथ ब्राह्मण के पूर्वभाग के प्रथम प्रपाठक में सावित्री ,गायत्री मन्त्र पर व्याख्यान किया गया है। गायत्री जो सविता देवता वाली है, वही सावित्री- गायत्री है। गायत्री का अर्थ है - गयान् प्राणान् तत्रे इति गायत्री अर्थात् जो प्राणों की रक्षा करती है, वह गायत्री है।

गोपथब्राह्मण एवं सामवेदीय ब्राह्मण नामक चतुर्थ खण्ड के अध्ययन में आप सभी का स्वागत है। यह खण्ड इस सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के निष्कर्ष के रूप में है। यद्यपि इतने से ही विषय प्रतिपादन पूरा नहीं होता। किन्तु इस खण्ड का विषय भी विशाल है, जिसका अध्ययन कई पुस्तकों के सहारे किया जा सकता था। किन्तु प्रस्तुत खण्ड की 4 इकाइयां आपको कठिन विषय का आसानी से अध्ययन करने की प्रेरणा देती हैं। गोपथ ब्राह्मण के अनुसार गायत्री की महिमा का वर्णन, ओंकार की महिमा का वर्णन, व्याकरण की पारिभाषिक शब्दावली आदि का निरूपण किया गया है। सामवेद के ब्राह्मण और महाब्राह्मण के प्रतिपाद्य तथा वैशिष्ट्य का निरूपण दूसरी इकाई में आप सभी के अध्ययन के लिए सरलता से प्रस्तुत किया गया है। इस खण्ड की अगली इकाई दर्शपूर्णमास यज्ञ और इष्टि के परिचय के लिए है। इसमें आप इस यज्ञ की विशेषता का अध्ययन करेंगे। अगली इकाई में ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतिपादित सृष्टि के रहस्य को बताते हुए पुरुषमेध प्रवर्ग्य और सर्वमेध आदि यज्ञों का वर्णन प्रस्तुत है। विश्वास है कि उक्त अध्ययन सामग्री आपके ज्ञानवर्धन में सहायक होगी और आपइस पाठ्यक्रम का अध्ययन कर लेने के पश्चात् उक्त तथ्यों की व्याख्या करने में सक्षम हो जाएंगे।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 गोपथ-ब्राह्मण के अनुसार गायत्री, ओंकार महिमा एवं व्याकरण शब्दावली

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 गोपथ ब्राह्मण के अनुसार गायत्री विमर्श

- 1.2.1 सावित्री गायत्री मन्त्र : मौद्गल्य और मैत्रेय का सम्वाद
- 1.2.2 सावित्री गायत्री के 24 योनि 12 मिथुन-व्याख्यान
- 1.2.3 सावित्री गायत्री के प्रथम पाद का व्याख्यान
- 1.2.4 सावित्री गायत्री के द्वितीय पाद का व्याख्यान
- 1.2.5 सावित्री गायत्री के तृतीय प्राद का व्याख्यान
- 1.2.6 द्वादश महाभूत और सावित्री सम्पत्

1.3 गोपथ ब्राह्मण के अनुसार ओङ्कार विमर्श व महिमा निरूपण

- 1.3.1 ओंकार विषयक वाकोवाक्यम्
- 1.3.2 ओम् को आदि में बोलने का विवरण
- 1.3.3 ओम् के देवता, ज्योति, छन्द और स्थान का उत्तर
- 1.3.4 ओम् चिन्तन का फल
- 1.3.5 ओम् की सृष्टि और ओम से सृष्टि
- 1.3.6 ओम् जय की महिमा
- 1.3.7 ओम् द्वारा असुरों से रक्षा

1.4 गोपथ ब्राह्मण में व्याकरण परिभाषिक शब्दावली विमर्श

1.5 सारांश

1.6 शब्दावली

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.8 सन्दर्भ-ग्रन्थ

1.9 बोध प्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप-

- गायत्री सवित्री मन्त्र का अर्थ बोध प्राप्त कर सकेंगे।
- गायत्री सवित्री के 24 योनि, 12 मिथुन, उसके पादों की व्याख्या व गायत्री सम्पत्

उपनिषद् का बोध प्राप्त कर सकेंगे।

- ओम् का स्वरूप विमर्श सहित ओमविषयक वाकोवाक्यम् का बोध प्राप्त कर सकेंगे।
- ओम से ब्रह्म द्वारा की गयी सृष्टि बोध प्राप्त कर सकेंगे।
- व्याकरण के पारिभाषिक पदावली से परिचित हो सकेंगे।
- ओम् और गायत्री के जप पूर्वक सत्कर्मों में प्रवृत्ति कराना आदि।

1.1 प्रस्तावना

वेदमन्त्रों का व्याख्यान व विनियोग ब्राह्मणग्रन्थ में हुआ है। अथर्ववेदीय गोपथ ब्राह्मण में जो गायत्री विमर्श, ओम-विमर्श व व्याकरण की धातु, प्रकृति प्रत्यय आद पदावली का वर्णन हुआ है उसी का साकल्येन बोधार्थ ये विषय इस इकाई में सविस्तार प्रश्नो, प्रतिवचनों में व्याख्यान किये गये हैं। ॐ और गायत्री सावित्री लौकिक एवं आध्यात्मिक उन्नति, प्रेय एवं श्रेय के साधन हैं। प्रत्येक मानव का ॐ में अधिकार है। वेदज्ञ को वेदमाता गायत्री सावित्री को अवश्य जपना चाहिये।

1.2 गोपथ-ब्राह्मण के अनुसार गायत्री विमर्श

1.2.1 सावित्री गायत्री मन्त्र : मौद्गल्य और मैत्रेय का संवाद

अथर्ववेदीय गोपथ ब्राह्मण के पूर्वभाग के प्रथम प्रपाठक के कण्डिका 31 से 38 पर्यन्त सावित्री गायत्री मन्त्र पर व्याख्यान किया गया है। गायत्री जो सविता देवता वाली है वही सावित्री गायत्री है। गायत्री का अर्थ है गयान् प्राणान् तत्रे इति गायत्री अर्थात् जो प्राणों की रक्षा करती है वह गायत्री है। गै गाने से अत्रन् प्रत्यय जोड़कर ङीष् प्रत्यय योग करने से गायत्री शब्द व्युत्पन्न होता है। निरुक्त में गायत्री शब्द व्युत्पन्न होता है। निरुक्त में गायत्री शब्द की निरुक्ति करते हुए यास्क ने कहा है- ''गायत्री गायतः स्तुतिकर्मणास्त्रिगमना वा विपरीत गायतो मुखाद् उदपतदिति च ब्राह्मणम् (7/12)। इसकी व्युत्पत्ति गै गानेशत्त्रैङ् पालनेऽकः से मानी गयी है। जिसका अर्थ गाने वाली/वाले की रक्षिका ऋचा।

गायत्री छन्द विशेष का नाम है। वह दैवी, आसुरी, आर्यो, प्राजापत्या, याजुषी, साम्नी और आर्ची ब्रह्मा भेद से आठ भेदों वाली होती है। 'ॐ' एकपदा दैवी गायत्री छन्द है। इस प्रकरण में जिस सावित्री गायत्री मन्त्र पर व्याख्यान हुआ वह 24 वर्णों वाली आर्षी गायत्री मन्त्र है- जो इसमें आगे व्ख्याख्यायित होगा। वह है-

तत सवितुर्वरेण्यं
भार्गो देवस्य धीमहि।
धियो योनः प्रचोदयात्।।

ऋग्वेद-3/62/10
यजुर्वेद-3/35, 22/9, 30/2, 36/3
सामवेद उत्तरार्चिक-6/3/10

उपर्युक्त मन्त्र की व्याख्यान भूमिका मुद्गल शिष्य मौद्गल्य से ग्लाव वंशीय मैत्रेय के मध्य प्रश्न एवं उत्तर में मिलती है। मैत्रेय ने मौद्गल्य को दुरधीयान् कहा तो शिष्य के माध्यम से मौद्गल्य ने मैत्रेय को 24 योनि वाली 12 मिथुन वाली सावित्री गायत्री को अध्ययन करने के लिए कहा। मैत्रेय ने मौद्गल्य से उपर्युक्त गायत्री पर प्रश्न पूछा- 'सवितुर्वरेण्यं भार्गो देवस्य' का अर्थ क्या है? इस व्याख्यान करें। यदि सविता प्रवेश करके उन्हें कर्मों का बुद्धियों को प्रेरित करता है जिससे वह चलता है। मैत्रेय ने उत्तर दिया- वेद छन्द है, कवि लोग प्रकाशनवान् सविता के उत्तम तेज (भर्गः) को अन्न कहते हैं। 'धियः' कर्म है, सविता प्रेरित करता है और जिससे चलता है।

1.2.2 सावित्री गायत्री के 24 योनि 12 मिथुन-व्याख्यान

मैत्रेय ने सविता व सावित्री के अध्ययन करने का निवेदन मौद्गल्य से किया तब मौद्गल्य ने उपदेश किया- मन ही सविता है और वाक् ही सावित्री है। जहाँ मन है वहाँ वाक् है और जहाँ वाणी है वहाँ मन है। यह दे योनि एवं एक मिथुन है। अग्नि ही सविता है और पृथिवी सवित्री है। जहाँ अग्नि है वहाँ पृथिवी है और जहाँ पृथिवी है वहीं अग्नि है। यह दो योनि एवं एक मिथुन हैं। वायु ही सविता है और अन्तरिक्ष ही सवित्री है। जहाँ वायु है वहाँ अन्तरिक्ष है और जहाँ अन्तरिक्ष है वहाँ वायु है। यह दो योनि एवं एक मिथुन है। आदित्य ही सविता है और द्युलोक सवित्री है। जहाँ आदित्य है वहाँ द्युलोक है, जहाँ द्युलोक है वहाँ आदित्य है। यह दो योनि और एक जोड़ा है। चन्द्रमा ही सविता है और नक्षत्र ही सवित्री है, जहाँ चन्द्रमा है वहाँ नक्षत्र है। जहाँ नक्षत्र है वहाँ चन्द्रमा है। ये दो योनि और एक मिथुन हैं। अह (दिन) ही सविता है और रात्रि ही सवित्री है। जहाँ दिन है वहाँ रात्रि है जहाँ रात्रि है वहाँ दिन है। ये दे योनि एक मिथुन हैं। उष्ण (ताप) ही सविता है और शीत ही सवित्री है। जहाँ ही उष्ण है वहीं शीत है, जहाँ शीत है वहीं उष्ण है। ये दो योनि एवं एक मिथुन हैं। अभ्र (बादल) ही सविता है और वर्षा ही सवित्री है। जहाँ ही अभ्र है वहीं वर्षा है, जहाँ वर्षा है वहाँ अभ्र है। ये दोनों दो योनि एवं एक मिथुन हैं। विद्युत ही सविता है और स्तनमिल (गर्जन) ही सवित्री है। जहाँ ही विद्युत है वहीं गर्जन है, जहाँ गर्जन है वहाँ विद्युत है। ये दो योनि और एक मिथुन हैं। प्राण ही सविता है और अन्न ही सवित्री है। जहाँ ही प्राण है वहाँ अन्न है और जहाँ अन्न है वहाँ प्राण है। ये दो योनि और एक मिथुन हैं। वेद ही सविता है और छन्द ही सवित्री है। जहाँ वेद है वहीं छन्द है, जहाँ छन्द है वहीं वेद है। ये दो योनि एक मिथुन हैं। यज्ञ ही सविता है और दक्षिणायें ही सवित्री हैं। जहाँ यज्ञ है वहीं दक्षिणायें हैं और जहाँ दक्षिणायें हैं वहीं यज्ञ है। ये दो योनि और एक मिथुन हैं। इन 24 योनियों में गया हुआ 12 मिथुनों से उत्पन्न ब्रह्मचारी आयु को पूरा जिये।

1.2.3 सावित्री गायत्री के प्रथम पाद का व्याख्यान

मौद्गल्य ने कहा- इस ब्रह्म ने ही श्री की प्रतिष्ठा की और आश्रय को देखा। वह तप करे। यदि उस व्रत में मैत्रेय को रखा जाय तो वह सत्य में प्रतिष्ठित हो जाये। उस सविता ने सावित्री मन्त्र के साथ ब्राह्मण को उत्पन्न करके उसके लिये सावित्री को बताया, 'तत्सवितुः वरेण्यम्' यह सावित्री का प्रथम पाद है। प्रथम पाद पृथ्वी के साथ ऋचा को ऋक् के साथ अग्नि को, अग्नि के साथ श्री को, श्री के साथ स्त्री को, स्त्री के साथ मिथुन को, मिथुन के साथ प्रजा को, प्रजा के साथ कर्म को, कर्म के साथ तप को तप के साथ सत्य को, सत्य के साथ ब्रह्म (वेदज्ञान) को, ब्रह्म के साथ ब्राह्मण को, ब्राह्मण के साथ व्रत को स्थापित किया। व्रत से ही ब्राह्मण (वेदज्ञानी) संशित, अशून्य, अविच्छिन्न, अविच्छिन्न तन्तु, जीवन, अस्तित्त्व वाला होता ह। इसका आशय है कि मनुष्य सावित्री के प्रथम पाद के सथ ऋग्वेद, पृथ्वी, अग्नि के विचार से अपने

और सन्तान आदि के जीवन को दृढ़ करे। (गोपथ ब्राह्मण पूर्वभाग 01 प्रपाठक, 34 कण्डिका)

1.2.4 सावित्री गायत्री के द्वितीय पाद का व्याख्यान

मौद्गल्य ने आगे व्याख्या करते हुए कहा 'भर्गो देवस्य धीमहि' (प्रकाशमान परमेश्वर के तेज को हम धारण करें।) यह सावित्री का दूसरा पाद है। ब्रह्म ने अन्तरिक्ष के साथ यजुः को, यजुः के साथ वायु को, वायु के साथ अभ्र को, अभ्र के साथ वर्षा को, वर्षा के साथ औषधियों (सोमलता, यत आदि) को, औषधियों के साथ वनस्पतियों (पीपल आदि) को औषधियों और वनस्पतियों के साथ पशुओं को, पशुओं के साथ कर्म को, कर्म के साथ तप को, तप के साथ सत्य को, सत्य के साथ ब्रह्म (वेदज्ञान) को, वेदज्ञान के साथ ब्राह्मण (वेदज्ञानी) को, ब्राह्मण के साथ व्रत को धारण कराया। व्रत से ही ब्राह्मण (वेदज्ञानी) संशित, अशून्य, अविच्छिन्न, अविच्छिन्न तन्तु, जीवन व अस्तित्त्व वाला होता है। इसका आशय है कि मनुष्य सावित्री के द्वितीय पाद के साथ यजुर्वेद, अन्तरिक्ष, वायु आदि के विचार से अपने और सन्तान आदि के जीवन को सुदृढ़ करे। (गोपथ ब्राह्मण पूर्वभाग 01 प्रपाठक, 35 कण्डिका)।

1.2.5 सावित्री गायत्री के तृतीय प्राद का व्याख्यान

मौद्गल्य ने आगे व्याख्यान करते हुए कहा- 'धियो यो नः प्रचोदयात्' (जो हमारी बुद्धियों/कर्मों को प्रेरित करे) यह सावित्री का तृतीय पाद है। ब्रह्म ने द्युलोक से साम को, साम से आदित्य को, आदित्य के साथ रश्मियों को, रश्मियों के साथ वर्षा को, वर्षा के साथ ओषधि और वनस्पतियों को ओषधि और वनस्तपतियों के साथ पशुओं को, पशुओं के साथ कर्म को, कर्म के साथ तप को, तप के साथ सत्य को, सत्य के साथ ब्रह्म (वेदज्ञान) को, ब्रह्म के साथ ब्राह्मण को, धारण किया। व्रत से ही ब्राह्मण संशित, अशून्य, अविच्छिन्न, अविच्छिन्न तन्तु, अविच्छिन्न जीवन वाला होता है। इसका आशय है कि मनुष्य सावित्री के तीसरे पाद के साथ सामवेद, द्युलोक, आदित्य आदि के विचार से अपने और सन्तान के जीवन को सुदृढ़ करे। (गोपथ ब्राह्मण, 01 प्रपाठक, 36 कण्डिका)।

1.2.6 द्वादश महाभूत और सावित्री सम्पत्

मौद्गल्य ने 37वीं कण्डिका में 12 तत्त्व जो सावित्री से सम्बन्धित हैं का व्याख्यान करते हुए कहते हैं- उसी इस सवित्री का अर्थ जानने वाला विद्वान ब्राह्मण ब्रह्म (ईश्वर) से सब प्रकार पाया गया, ग्रसा गया और छुआ गया है। ब्रह्म से आकाश सब ओर से पाया गया, ग्रसा गया, छुआ गया है। आकाश से वायु सब ओर से पाया गया, ग्रसा गया, छुआ गया है। वायु से ज्योति सब ओर से पाया गया, ग्रसा गया, छुआ गया है। ज्योति से आपः (जल) अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट है। जल से भूमि अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट है। भूमि से अन्न अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट है। अन्न से प्राण अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट है। प्राण से अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट है। मन से वाक् अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट है। वाक् से वेद अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट है और वेदों से यज्ञ अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट है। वहीं 12 महाभूत (ब्रह्म, आकाश, वायु, ज्योति, जल, भूमि, अन्न, प्राण, मन, वाक, वेद, और यज्ञ) इस विधि से प्रतिष्ठित हैं। उनमें यज्ञ ही पराद्धर्य है। इसका आशय है कि ब्रह्मज्ञानी पुरुष ब्रह्म आदि 12 महाभूतों के यथावत् ज्ञान से परम गति पाता है।

मौद्गल्य ने सावित्री सम्पद् का व्याख्यान 38वीं कण्डिका में करते हुए कहा- "उस ही यज्ञ को इस प्रकार जानने वाले मानते हैं- हम इस यज्ञ को जानते हैं- सचमुच वे अज्ञानी हैं। यह यज्ञ वेदों में वेद वाक् में, वाक् मन में, मन प्राण में, प्राण अन्न में, अन्न भूमि में, भूमि जल में, जल ज्योति में, ज्योति वायु में, वायु आकाश में, आकाश ब्रह्म में और ब्रह्म वेदज्ञ ब्राह्मण में प्रतिष्ठित है। जो कोई भी इस प्रकार से जानता है वह ब्राह्मवित् है, वह पवित्र कीर्ति और सुगन्धित गन्धों को प्राप्त करता है। वह समस्त पाप से छूटा हुआ अनन्त श्री को प्राप्त होता है जो ऐसा जानता है और जो ऐसा विद्वान इस प्रकार से वेदों की माता सावित्री सम्पत् रूपी उपनिषद् को भजता है- यह ब्राह्मण है।

अभ्यास प्रश्न - 1

1. गायत्री है-
   - क. छन्द
   - ख. व्याकरण
   - ग. कल्प
   - घ. देवता
2. गायत्री मन्त्र का देवता है-
   - क. वरुण
   - ख. अग्नि
   - ग. यम
   - घ. सविता
3. गायत्री सावित्री के कुल योनि व मिथुन हैं-
   - क. 12 व 12
   - ख. 24 व 18
   - ग. 24 व 12
   - घ. 20 व 20
4. गायत्री महिमा वर्णित है-
   - क. गोपथ में
   - ख. सामविधान में
   - ग. ताण्ड्य में
   - घ. ऐतरेय में
5. सावित्री गायत्री से सम्बन्धित महाभूत हैं-
   - क. 12
   - ख. 10
   - ग. 8

घ. 24

6. 'तत्सवितुः वरेण्यम्' सम्बन्धित है-

क. पृथिवी से

ख. अन्तरीक्ष से

ग. द्युलोक से

घ. यजुर्वेद से

7. 'भर्गो देवस्य धीमहि' सम्बन्धित है-

क. ऋग्वेद से

ख. अथर्ववेद से

ग. यजुर्वेद से

घ. सामवेद से

8. 'धियो यो नः' सम्बन्धित है-

क. सामवेद से

ख. पृथिवी से

ग. अन्तरीक्ष से

घ. यजुर्वेद से

9. 24 योनि वाला है-

क. गायत्री सावित्री

ख. अनुष्टुप

ग. जगती

घ. वृहती

10. 'भर्गः' पद का अर्थ है-

क. सुख

ख. शान्ति

ग. तेज

घ. वेद

1.3 गोपथ ब्राह्मण के अनुसार ओङ्कार विमर्श व महिमा निरूपण

1.3.1 ओ॓ंकार विषयक वाकोवाक्यम्

ओ॓ंकार से सम्बन्धित वाकोवाक्यम् (प्रश्न-प्रतिवचन) गोपथ ब्राह्मण के पूर्वभाग के प्रथम प्रपाठक के कण्डिका 24 से 30 पर्यन्त वर्णित है। उसमें कण्डिका 24 में ओ॓ं से सम्बन्धित 36

प्रश्न पूछे गये हैं जो निम्नलिखित है- ओंकार के विषय में पूछते हैं- (1) कौन धातु है? (2) क्या प्रतिपादक है? (3, 4) क्या नाम और आख्यात है? (5) क्या लिङ्ग है? (6) क्या वचन है? (7) क्या विभक्ति है? (8) कौन प्रत्यय है? (9, 10, 11) कौन स्वर, उपसर्ग और निपात है? (12) क्या निश्चित व्याकरण है? (13) कौन विकार है? (14) कौन विकारी है? (15) कितनी मात्रा वाला है? (16) कितने वर्ण वाला है? (17) कितने अक्षरों वाला है? (18) कितने पाद/पद वाला है? (19) कौन संयोग है? (20, 21) कौन सा स्थान का अनुग्रहात और करण है? (22) शिक्षक लोग क्या उच्चारण करते हैं? (23) क्या छन्द है? (24) कौन वर्ण (रङ्ग) है? यह पहिले प्रश्न हैं, अब पिछले प्रश्न हैं-(1-6) मन्त्र में, कल्प में, ब्राह्मण ग्रन्थ में, ऋग्वेद में, यजुर्वेद में सामवेद में किस कारण से ब्रह्मवादी लोग ओंकार को प्रारम्भ में उच्चारण करते हैं? (7) क्या देवता है? (8) क्या ज्योति है? (9) क्या निरुक्त है? (10) क्या स्थान है? (11) क्या प्रकृति है? (12) क्या आध्यात्म (आत्मज्ञान) है? ये 36 प्रश्न हैं। 12, 12, 12 प्रश्नों के तीन वर्ग हैं। जिससे ओङ्कार की व्याख्या की जायेगी।

कण्डिका 25 में इन्द्र ने प्रजापति से पूछा कि- (1) ॐकार क्या है? (2) यह किसका पुत्र है? (3) इसमें क्या छन्द है? (4) और इसका वर्ण (रङ्ग) क्या है? (5) कौन ब्रह्म (वेदज्ञ) इस ब्रह्म को प्राप्त करता है? और उससे ही वह (ब्रह्म) भद्र ओङ्कार को पहले पाता है। यहाँ शंका होती है- स्वरित और उदात्त स्वर वाला, एक अक्षर वाला ओङ्कार ऋग्वेद में है। तीनों स्वरों (ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत) के सहित उदात्त, एक अक्षर वाला ओंङ्कार यजुर्वेद में है। दीर्घ, प्लुत के सहित उदात्त एक अक्षर वाला ओंङ्कार सामवेद में है। ह्रस्व स्वर के साथ उदात्त अक्षर वाला ओंङ्कार अथर्ववेद में है। उदात्त सहित उदात्त दो पद वाला 'अ' 'उ' यह सार्द्ध चार मात्रायें हैं और मकार में व्यञ्जन है ऐसा कहते हैं। इन शंकाओं का समाधान है- जो पहली मात्रा है वह ब्रह्म देवता वाली रङ्ग से लाल है, जो उसका नित्य ध्यान करता है वह बाह्य पद प्राप्त करता है। जो दूसरी मात्रा है वह विष्णु देवता वाली, रङ्ग से काली है, जो उसका ध्यान करता है वह वैष्णव पद को पाये। जो तृतीय मात्रा है वह ऐशन देवता वाली रङ्ग से पीली है, जो उसका ध्यान करे वह ऐशन पद को पाये। जो आधी के साथ चौथी (1½) मात्रा है वह सब देवताओं वाली व्यक्त होकर आकाश में विचरण करती है और रङ्ग से उज्जवल स्फटिक मणि के समान है, जो पुरुष उस स्वर मात्रा का ध्यान करे वह अनामक पद को जाये। जो ब्राह्मण ॐ को नहीं जानता है उसका पुनः उपनयन संस्कार होवे। अतः ब्रह्मज्ञानी का वचन आदर योग्य है। पूर्व में पूछे गये पाँच प्रश्नों के उत्तर है- (1) ॐ का तव्य गोत्र वाला है। (2) ब्रह्मा का पुत्र है। (3) दैवी गायत्री छन्द है। (4) शुक्ल वर्ण है। (5) बढ़ाने वाला, बसाने वाला, ज्ञानदेने वाला, सब वेदों का प्रकाश्य विषय ओंङ्कार है।

कण्डिका 24 में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर- (1) कौन धातु है? उत्तर- आपृवाआर (पृख्यापना) और अब (रक्षा करना)। (2) प्रतिपादक क्या है? उत्तर कृदन्त अर्थवान् शब्द प्रतिपादक होता है। (3) स्वर क्या है? उत्तर- उदात्त, (4) निपात क्या है? उत्तर- अव्यय होकर निपात होता है। (5) विकारी क्या है? उत्तर- आप् धातु और अव् धातु दोनों का सम्प्रसारण होता है, अर्थात् आप् के 'पकार' को 'वकार' होकर 'बकार' को 'वकार' होकर और 'वकार' को 'उकार' हुआ, इसी प्रकार अव् 'वकार' को सम्प्रसारण उकार हुआ। फिर आप् धातु के आ औ उ को तथा अव् धातु के अ उ को गुण ओ, मकार प्रत्यय होकर ओम पद सिद्ध होता है। (उणादि कोष में ओम की सिद्धि बव रक्षणे$मन् प्रत्यय पूर्वक होती है। (6) कितने वर्ण वाला? (7) कितने अक्षर वाला है? इनके उत्तर दो वर्ण वाला, एक अक्षर वाला है। (8, 9, 10, 11) तीनों लिङ्गों, तीनों

विभक्तियों, तीनों वचनों में समान है, विकारशून्य निपात् है। (इस प्रकार ओम् दो वर्ण (ओम्) वाला एक अक्षर (ओम्) सिद्ध होता है। (12) वह ओम् कितनी मात्रा वाला है? आरम्भ से तीन मात्राओं को मन्त्र के आरम्भ में ही वह (ओ-उम्) प्राप्त होता है। {प्लूत हो जाता है और मकार चौथी मात्रा को} अर्थात् ओ-उम् में चार मात्राएँ होती हैं। (13) क्या स्थान है? उत्तर - दोनों ओष्ठ स्थान हैं और दोनों नाद बढ़ाने वाले प्रयत्न हैं, दो स्थान वाला सन्ध्यक्षर होता है। अकार वर्णमात्र कण्ठस्थान वाला है और ऊपर कहे गये (उकार, मकार) को शेष वर्ण अकार विवृति प्रयत्न में स्थित है। (यह 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15 का उत्तर है), (16) कौन संयोग है, इसका उत्तर है- संयोग नहीं है। (17-23) प्रश्न कौन आढ़यात है, उपसर्ग है, कौन स्वर है, कौन लिङ्ग है कौन विभक्ति है, कौन वचन है- इन छः प्रश्नों के उत्तर संस्थानाध्यायी आचार्य हुए थे, जो आढ़यात् उपसर्ग, अनुदात्त, स्वरित, लिङ्ग, विभक्ति और वचन को सुनने से ही वे जान लेते हैं और कारण को नहीं पूछते (इनका उत्तर कण्डिका 26 में व्याख्यान हुआ है वही देख सकते हैं)

इसके अनन्तर दूसरे पक्ष वालों को कवि पञ्चाल देशवासियों में तीव्र मनुष्य पूछने वाला हुआ। उद्गीथी के दोषों का निश्चय करके आप लोग अलग-अलग बतावें और वह भी वर्ण-वर्ण, अक्षर-अक्षर, पद-पद और अंक-अंक करके विभक्ति में बतायें। इसका उत्तर ऋषियों की निरन्तर सेवित वाणी की स्तुति करते हैं इसलिए कारण हम बतलाते हैं। वर्णों में यह वर्ण यह रूप हो जायेगा, यह षडङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, और ज्योतिष) वेत्ता बताते हैं उसको वैसा ही हम लोग पढ़ते हैं।

(23) क्या छन्द है? और (24) वर्ण क्या है? इसका उत्तर है गायत्री छन्द है देवताओं की गायत्री एक अक्षर वाली और श्वेतवर्ण वाली कही गयी है।

उपर्युक्त 12, 12 के वर्ग है? यह धातु और अर्थ को बताने वाला, छन्दों को बताने वाला शिक्षा योग्य व्याकरण है अर्थात् 24 भागों में व्याकरण विषय है।

1.3.2 ॐ को आदि में बोलने का विवरण

कण्डिका 28 में ॐ को आदि में बोलने का विवरण दिया गया है। इसमें 12 वर्ग के 1-6 तक प्रश्नों का उत्तर है विचारशून्य उड़ाउ बातें सुनी जाती है- द्वापर के आरम्भ में ऋषियों के बीच एकदेशीय दोषपति इस बात में चिह्न करने लगा-तीन वेद विशेषों के साथ सोमरस पीना चाहिए उससे चतुर्थ वेद अथर्ववेद के छूट जाने से ऋग्वेद, यजुर्वेद और साम वेद निस्तेज हो गये। उस पर महर्षि लोग विचार करने लगे। हमको बड़ा शोक और भय प्राप्त हुआ है और यही नहीं सभी मिलकर कहने लगे कि हम सभी लोग भगवान् (ॐ) के पास चले। ॐ ने कहा सब लोगों का शरण में ही हो जाऊँ। वैसी ही हो ऐसा कहकर चुपचाप बैठ गये। वे बोले तुम अनुपसन्न के लिए मत होवो, ओम् ने कहा तुम्हारे अतिसमीप में बैठता हूँ। वे ऋषि नीचे को हो गये। वह ओम् समीप जाकर इनसे कहा-मेरी ही (ओम्) व्याहृति को प्रत्येक मन्त्र के आदि में करो, इस प्रकार मेरे लोग सब ओर से धारण किये जाते हैं।

भृगु अंङ्गिराओं के बिन सोमरस नहीं पीना चाहिए। जो दूसरे लोग सोमरस पिये तो ऋत्विज लोग हार जाते हैं, यजमान राग से गिर पड़ता है और श्रुति नष्ट होकर रहती है। इस प्रकार से ही पिछले संयोग से सन्तान-सन्तान को शासन करे। इस प्रकार प्रताप नहीं हारेगा। वैसा ही उसने कहा। ऋषि लोग बोले हे भगवन्! हम वैसा ही करेंगे। वे समीप गये और बढ़ने लगे, वे इस

प्रकार से शोक रहित और निर्भय हो गये। अतः ब्रह्मवादी लोग ओङ्कार को प्रारम्भ में उच्चारण करते हैं।

1.3.3 ॐकार के देवता, ज्योति, छन्द और स्थान का उत्तर

29वीं कण्डिका में इनका उत्तर दिया गया है- ऋग्वेद के मन्त्रों में अग्नि देवता, अग्नि ज्योति, गायत्री छन्द, पृथिवी स्थान है। प्रथम मन्त्र का इस प्रकार यजुर्वेद के मन्त्रों में वायु देवता, वायु ज्योति, त्रिष्टुप छन्द और अन्तरिक्षा स्थान है। प्रथम मन्त्र को इस प्रकार पढ़ते हैं

सामवेद के मन्त्रों में प्रथम मन्त्र का आदित्य देवता, आदित्य ज्योति, जगती छन्द और द्युलोक स्थान है, अथर्ववेद के मन्त्रों में चन्द्रमा देवता, चन्द्रमा ज्योति, सब छन्द और व्यापक जल स्थान है।

1.3.4 ॐकार चिन्तन का फल

30वीं कण्डिका में आत्मज्ञान का अधिकरण क्या है इसका उत्तर व ॐकार चिन्तन का फल व्याख्यान हुआ है। आत्मज्ञान का अधिकार, आत्मा का औषध और आत्मा का मोक्ष सुख ओङ्कार है। संगति का लेश रखने वाली प्राणियों की चिन्ता को रोककर आत्मा को विचारे। चिन्ता को उल्लंघन करके वेदों के द्वारा सबसे श्रेष्ठ आत्मज्ञान के फल को प्राप्त करता है। यह अर्थ है। विचारों के साथ परिपूर्ण ज्ञान है।

वाकोवाक्यम् में इन्हीं प्रश्नों प्रतिवचनों से यथार्थ पद को निरन्तर विचर कर प्रबल प्रकरण जानने वाला, और विषय समझने वाले मनुष्य होते। सभी उपर्युक्त वाकोवाक्य में यही व्याख्यान है।

1.3.5 ॐ की सृष्टि और ॐ से सृष्टि

गोपथ ब्राह्मण की पूर्वभाग की पञ्चम कण्डिका में श्रान्त, तप्त और सन्तप्त ब्रह्म से ॐ की उत्पत्ति बताई गयी है। ॐ महाव्यहृति है। 16वीं कण्डिका में ब्रह्म के द्वारा ब्रह्मा की सृष्टि प्रतपादित है। ब्रह्मा ने ब्रह्मचर्य किया और उसने 'ओम्' इस एक अक्षर को देखा। जिसमें दो वर्ण, चार मात्राएँ हैं। वह सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, निर्विकार ब्रह्म वाला, ब्राह्मीव्याहृति और ब्रह्म दैवत है। ब्रह्मा ने उस 'ॐ' से सभी कामनाओं, सभी लोकों, सभी देवों, सभी दिव्य पदार्थों, सभी वेदों, सभी यज्ञों, सभी शब्दों, सभी विविध वसतियों, सम्पूर्ण स्थावर-जङ्गम सत्ताओं को बनाया। ओम् के प्रथम वर्ण (ओकार) से तेज और ज्योतियों (प्रकाशमान पदार्थों) को बनाया।

ब्रह्मा ने 'ॐ' की पहली स्वरमात्रा से पृथिवी, अग्नि, ओषधियाँ, वनस्पतियाँ, ऋग्वेद, भूःमहाव्याहृति, गायत्री छन्द, त्रिवृत (कर्म, उपासना और ज्ञान), स्तोम, पूर्वी दिशा वसन्त ऋतु, आध्यात्म, वाणी, जिह्वा, रस, इन्द्रियों को बनाया। (कण्डिका - 17)।

ब्रह्मा ने 'ॐ' की दूसरी स्वर मात्रा 'उकार' से अन्तरिक्ष, वायु, यजुर्वेद, भुवः महाव्याहृति, त्रैष्टुभ छन्द, पन्द्रह (पञ्च प्राण + पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ + पञ्च महाभूत) पदार्थ वाले स्तोम, प्रतीची दिशा, ग्रीष्म ऋतु, आध्यात्म प्राण, नासिकायें, गन्ध-घ्राण इन्द्रियों को बनाया। (कण्डिका-18)।

ब्रह्मा ने ॐकार की तीसरी स्वर मात्रा 'ओ' से द्युलोक, आदित्य, सामवेद, स्वः महाव्याहृति, जगती छन्द, सत्रह {चार दिशा, चार विदिशा, एक ऊपर की, एक नीचे की, दश दिशायें +

सत्व, रज और तम (तीन), ईश्वर, जीव और प्रकृति सहित संसार से सम्बन्धित स्तोम, उत्तरी दिशा, वर्षा ऋतु, आध्यात्म ज्योति, दो आँखें, देखने का सामर्थ्य, इन्द्रियों को बनाया। (कण्डिका-19)।

ब्रह्मा ने 'ॐ' की 'वकार' मात्रा से (सम्प्रसारण से 3) जल, चन्द्रमा, नक्षत्रों, अथर्ववेद, ओम् इस अपने आत्मा को उत्पन्न किया। इस अनेक ज्ञानों के अनुष्टुभ छन्द, इक्कीस (पञ्च सूक्ष्मभूत, पञ्च स्थूलभूत, दश इन्द्रियाँ और एक अन्तःकरण), दक्षिण दिशा, शरदऋतु, आध्यात्म मन, ज्ञान, ज्ञेय, इन्द्रियों को बनाया। (कण्डिका 20)।

ब्रह्मा ने 'ॐ' की 'मकार' श्रुति से इतिहास और पुराण, वाकोवाक्यम्, गाथा, नाराशंसी, अनुशासनों, उपनिषदों को बनाय, वृधत्, करत्, गुहत्, महत्, तत, शम व्याहृतियों और ओम् महाव्याहृति को बनाया, स्वर से शान्त करने वाली अनेक तन्त्रियों, स्वर सहित नाचने, गाने, बजाने की विधाओं को बनाया। चैत्ररथ, दिव्य पदार्थों के समूह, वैश्रुत को, ज्योति को वृहती छन्द, तीनों कालों में स्तवनीय 33 देवताओं से सम्बन्धित स्तोम, नीचे और ऊपर की दिशा, हेमन्त और शिशिर ऋतुओं को आध्यात्म कान, शब्दभक्षण, इन्द्रियों को बनाया। (कण्डिका-21)।

1.3.6 ओम् जय की महिमा

कण्डिका 22 में व्याख्यान करते हुए कहा गया है कि वही एक अक्षर वाली ऋक् (ओम्) अविनाशी ब्रह्मा के तप से पहले ही प्रकट हुई। 'ॐ' वेद को अथर्वा से प्राप्त हुआ सामर्थ्य है। उसी 'ॐ' से मन्त्र प्रकट हुये। वह पुरुष निश्चय ही तप के बिना, सेवा के बिना, मन्त्रों की घटती और दोष और समय का खोना करे। उसको निश्चल वेदों के तेज से भरपूर करे और मन्त्र भी ओम् के सम्मुख होवे, जैसे गर्भ माता के सामने होते हैं। जिज्ञासु पुरुष पहले ओंकार को बोले, इसी ही ऋचा से उस दोष को भरपूर करे यही ऋचा यज्ञ के पहले और पश्चात् बोली जाती है। वह भी इस ऋचा से कहा गया है जो ऋचा जप से पहले बोली जाती है- ऋचोऽक्षरे परमें व्योमन् इति (अथर्ववेद-9/10/18) सो इस अक्षर (ओम्) को ब्रह्मज्ञानी जिस इष्ट पदार्थ को चाहे, त्रिरात्रियों में उपवास करता हुआ, पूर्व की ओर मुख किये हुए, वाणी को रोके हुए, मौनभाव हुए, कुशासन पर बैठकर सहस्र बार जपे। उसके सभी काम सिद्ध होते हैं यही ब्राह्मण व्याख्यान है।

1.3.7 'ॐ' द्वारा असुरों से देवताओं की रक्षा

कण्डिका 23 में व्याख्यान किया गया है- वसोः धाराओं का इन्द्र का नगर अर्थात् जीवात्माओं का घर है। उसको असुरों ने (कुविचारों से) घेर लिया। वे देवता (इन्द्रियाँ अथवा विद्वान) डरने लगे। कौन इन असुरों को मारेगा। वे ओङ्कार, ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र को देखे। वे उस ओम् से बोले। हम लोग आप के मुख से इन असुरों को जीतें। ओम् बोला कि मेरे लिये क्या प्रतिफल होगा। वे देवता बोलो- वर माँगो। ओम् ने वर माँगा- "मुझ ओम् को न बोलकर ब्राह्मण वेद न बोले। जो वे बिना ओम् बोले तो वह वेद विरुद्ध होवे।" देवताओं ने कहा वैसा ही हो। वे देवता देव्यज्ञ के पिछले आधे भाग से असुरों से घेर लिये गये। उन असुरों को ओङ्कार द्वारा अग्नि के प्रकाश करने वाले याजक के स्थान (यज्ञ-मण्डप) से देवताओं ने हरा दिया। सो जो देवताओं ने असुरों को हराय। अतः ओङ्कार मन्त्रादि के प्रारम्भ में बोला जाता है। जो मनुष्य निश्चय से ओंङ्कार न जानता है वह अप्रिय होवे। अतः ओङ्कार ऋग्वेद में ऋक्, यजुर्वेद में यजुष,

सामवेद में साम, सूत्र में सूत्र, ब्राह्मण में ब्राह्मण, श्लोक में श्लोक, प्रणव में प्रणव होता है- यही ब्राह्मण (व्याख्यान) है।

1.4 गोपथ-ब्राह्मण में व्याकरण पारिभाषिक शब्दावली विमर्श

गोपथ ब्राह्मण के पूर्वभाग के प्रथम प्रपाठक के 24 वीं कण्डिका में ॐ विषयक पूछे गए प्रश्नों में कण्डिका में ॐ विषयक पूछे गये प्रश्नों में व्याकरण तत्त्वों की उपस्थिति देखने को मिलती है। सम्पूर्ण कण्डिका ही निम्नलिखित है-

"ओङ्कारं प्रच्छामः को धातुः, किं प्रातिपदिकं, किं नामाख्याते किं लिङ्गं, किं वचनं का विभक्ति, कः प्रत्ययः, कः स्वर उपसर्ग निपातः किं वै व्याकरणं को विकारः को विकारी, कतिमात्रः कतिवर्णः कत्यक्षरः कतिपदः कः संयोगः किं स्थानानुप्रदानकरणं शिक्षकाः किमुच्चारयन्ति किं छन्दः को वर्णः इति पूर्वे प्रश्नाः"

अर्थात् "ॐ को हम पूछते हैं- कौन धातु है? क्या प्रातिपदिक है? क्या नाम है? क्या आख्यात है? क्या लिङ्ग है? क्या वचन है? क्या विभक्ति है? कौन प्रत्यय है? कौन स्वर, उपसर्ग और निपात हैं? क्या निश्चित व्याकरण है? कौन विकार है? कौन विकारी है? कितनी मात्रा वाला है? कितने वर्ण हैं? कितने अक्षर वाला है? कितने पाद वाला है? कौन संयोग है? कौन सा स्थान का अनुप्रदान और करण है? शिक्षक लोग क्या उच्चारण करते हैं? छन्द क्या है? कौन वर्ण है? यह प्रथम प्रश्न है।"

आचार्य बलदेव उपाध्याय 'वैदिक साहित्य और संस्कृति' पृष्ठ 350 पर लिखते हैं- "प्राचीन व्याकरण के विषय का निर्देश गोपथ ब्राह्मण (1/24) में स्पष्टतया किया गया है। धातुप्रातिपदिक, नाम, आख्यात, लिङ्ग, वचन, विभक्ति, प्रत्यय, स्वर, उपसर्ग, निपात, मात्रा, वर्ण, अक्षर, पदसंयोग, स्थानानुप्रदान आदि पारिभाषिक शब्द उस समय के व्याकरणशास्त्र के मान्य शब्द थे। इस उद्धरण का शिक्षकाः शब्द भी पारिभाषिक है। इस शब्द का प्रयोग शुद्ध उच्चारण की शिक्षा देने वाले व्यक्ति के लिए किया गया है। व्याकरण शब्द का प्रयोग भी इस बात का स्पष्ट प्रतिपादक है कि गोपथ ब्राह्मण की रचना से बहुत पूर्वकाल में ही इस शास्त्र की उत्पत्ति हो चुकी थी।"

अभ्यास प्रश्न - 2

1. 'ॐ' की महिमा वर्णित है-

   क. शतपथ में

   ख. शाङ्खायन में

   ग. गोपथ में

   घ. तैत्तिरीय में

2. कण्डिका 24 में ओम् विषयक प्रश्नों की सङ्ख्या है-

   क. 12

   ख. 24

   ग. 18

घ. 36

3. ओम् में वर्ण हैं-

क. 2

ख. 4

ग. 8

घ. 6

4. ओम् में धातु है-

क. आप्लृ

ख. अव्

ग. दोनों

घ. इनमें से कोई नहीं

5. ओम् का वर्ण है-

क. नीला वर्ण

ख. काला वर्ण

ग. श्वेत वर्ण

घ. लोहित वर्ण

6. 'ॐ' है-

क. आर्चि गायत्री

ख. ब्राह्मी गायत्री

ग. याजुषी गायत्री

घ. दैवी गायत्री

7. गोपथ ब्राह्मण में ओम् की कामनापूरक संख्या है-

क. 1 हजार

ख. 2 हजार

ग. 3 हजार

घ. 5 हजार

8. व्याकरण के पारिभाषिक पद आए हैं-

क. ऐतरेय में

ख. शतपथ में

ग. गोपथ में

घ. षड् विंश में

9. ओम् का उच्चारण स्थान है-

क. दोनों ओष्ठ

ख. कण्ठ

ग. तालु

घ. मूर्धा

10. धातु, प्रकृति, प्रत्यय आदि वर्णित हैं-

क. माण्डूक्य में

ख. शतपथ में

ग. गोपथ में

घ. दैवत में

1.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई का सारांश है- सम्पूर्ण वेदों में आर्षी गायत्री "ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्" सविता देवता वाली है, इसके 24 योनि और 12 मिथुन हैं। इस गायत्री को जपने वाला ब्राह्मण संशित, अशून्य, अविच्छिन्न, अविच्छिन्न तन्तु, जीवन और अस्तित्त्व वाला होता है। सावित्री गायत्री से 12 महाभूत (ब्रह्मादि) अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट हैं। 12 महाभूतों के ज्ञान से वेदज्ञ परमगति पाता है। वह पवित्र कीर्ति, अनन्त श्री को पाता है। ओम् दो वर्ण वाला, चार मात्रा वाला, सृष्टि करने वाला, असुरों से रक्षा करने वाला है। इसके तीन रात्रियों में उपवास करके 1000 बार जपने से मनोरथ व कामनाएँ पूरी होती हैं। ओम् को प्रणव व उद्गीथ भी कहा जाता है। इसमें व्याकरण के पारिभाषिक पद, धातु आदि 36 तत्त्व उपदिष्ट हैं।

1.6 शब्दावली

1. गायत्री - प्राणों की रक्षा करने वाला।
2. सावित्री सम्पत् उपनिषद् - सविता देवता वाली सम्पदा का रहस्य।
3. ओम् - सृष्टि से पहले उत्पन्न, उत्तर सृष्टि में सहायक, दो वर्ण वाला चार मात्राओं वाला अक्षर।
4. उद्गीथ - जो जोर से गाया जात है (ओम्)।
5. प्रणव - जो प्रकृष्टरूप से स्तुत होता है (ओम्)।
6. व्याकरण - जिसमें धातु-लिङ्गादि विचार होता है।

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न क्र. 1 - 1. क, 2. घ, 3. ग, 4. क, 5. क, 6. क, 7. ग, 8. क, 9. क, 10. ग

अभ्यास प्रश्न क्र. 2 - 1. क, 2. घ, 3. क, 4. ग, 5. ग, 6. घ, 7. क, 8. ग, 9. क, 10. ग

1.8 सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. गोपथ ब्राह्मण भाष्यम् - आर्यभाषायामनुवदकं- श्री पण्डित क्षेमकरणदास द्विवेदी, सम्पादक- आचार्या डॉ. प्रज्ञा देवी एवं व्याकरणाचार्या मेधा देवी, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान 436014 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, पुनर्मुद्रण- 2020

2. पिंङ्गलकृत छन्दःसूत्रम्, टीकाकार- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी व डॉ. श्यामलाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण- 2013

3. क्षीर-तरङ्गिणी, सम्पादक युधिष्ठरमीमांसक, सहयोगी रामशङ्कर भट्टाचार्य, रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत (हरियाणा) विक्रम सम्वत् - 2063

4. ऋग्वेद - सम्पादक : पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान, बरेली, संस्करण- 2002

5. यजुर्वेद संहिता - सम्पादक- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य व भगवती देवी शर्मा, प्रकाशक : ब्रह्मवर्चस् शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, उत्तर प्रदेश, संस्करण- 1993

6. सामवेद संहिता - सम्पादक- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य व भगवती देवी शर्मा, प्रकाशक : ब्रह्मवर्चस् शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, उत्तर प्रदेश, संस्करण- 1994

7. अथर्ववेद - सम्पादक- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक : संस्कृति संस्थान, बरेली, संस्करण- 2000

8. वैदिकी - डॉ. मुन्शीराम शर्मा, ग्रन्थम् रामबाग, कानपुर, संस्करण- 1972

1.9 बोध प्रश्न

1. गायत्री मन्त्र का उल्लेख करते हुए गायत्री सम्पत् उपनिषद् को लिखिए।
2. ओम् के स्वरूप, व उसके पादों से उत्पन्न की गयी सृष्टि को लिखिए।
3. गोपथ में व्याकरण विषयक तत्त्व है? इसका उत्तर लिखिए।

इकाई 2 सामवेदीय ताण्ड्य-ब्राह्मण (महाब्राह्मण) का प्रतिपाद्य एवं वैशिष्ट्य

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 सामवेदीय ताण्डय ब्राह्मण का प्रतिपाद्य

- 2.2.1 प्रथम अध्याय का प्रतिपाद्य
- 2.2.2 द्वितीय व तृतीय अध्यायों का प्रतिपाद्य
- 2.2.3 चतुर्थ व पञ्चम् अध्यायों का प्रतिपाद्य
- 2.2.4 षष्ठ, सप्तम, अष्टम व नवम अध्यायों का प्रतिपाद्य
- 2.2.5 दशम से पञ्चदश अध्यायों का प्रतिपाद्य
- 2.2.6 षोडश से एकोनविंश अध्यायों का प्रतिपाद्य
- 2.2.7 विंश से द्वाविंश अध्यायों का प्रतिपाद्य
- 2.2.8 त्रयोविंश से पञ्चविंश अध्यायों का प्रतिपाद्य

2.3 ताण्ड्य ब्राह्मण का वैशिष्ट्य

2.4 सारांश

2.5 शब्दावली

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.7 सन्दर्भ-ग्रन्थ

2.8 बोध प्रश्न

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप-

- ताण्ड्य महाब्राह्मण के स्वरूप एवं उसमें प्रतिपादित स्तोम, साम, गवामयदि 178 क्रतुओं को जान पायेंगे।
- क्रतुपदक पथम अध्यायगत मन्त्रों से परिचित होंगे।
- यज्ञ संस्कृति से परिचित हो सकेंगे।
- इस ब्राह्मण की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

सामवेद संहिता से सम्बन्धित आठ ब्राह्मण ग्रन्थ मिलते हैं। 1- प्रौढ़ ब्राह्मण, 2- षडविंशब्राह्मण, 3- सामविधि, 4- आर्षेय ब्राह्मण, 5- देवताध्याय ब्राह्मण, 6- उपनिषद् ब्राह्मण, 7-

संहितोपनिषद् ब्राह्मण व 8- वंश ब्राह्मण। उनसे प्रौढ़ ब्राह्मण सामवेद संहिता के ताण्डि शाखा से सम्बन्धित होने के कारण ताण्ड्य, पच्चीस अध्यायों में विभक्त होने से महाब्राह्मण कहा जाता है। यज्ञों में उद्गाता ऋत्विज के कार्यों की गहन एवं विस्तृत मीमांसा इसमें की गयी है। इसमें मन्त्र सन्दर्भ, त्रिवृत्त आदि स्तोम, गवामयन से लेकर विश्वसृजामयन, सहस्रसंवत्सर पर्यन्त 178 क्रतुओं का प्रतिपादन किया गया है। सामों की भी मीमांसा इसमें देखने को मिलती है।

2.2 सामवेदीय ताण्डय ब्राह्मण का प्रतिपाद्य

इस महाब्राह्मण में कुल पच्चीस अध्याय हैं। अध्याय काण्डों में विभक्त हैं और काण्डों में ब्राह्मण विभाग मिलता है। यह विभाग भाष्यग्रन्थों में उपलब्ध होता है जबकि मूल भाग में केवल प्रपाठक मिलते थे। पञ्चपञ्चिकाओं की सूचना मिलती है। यहाँ पर अध्यायगत प्रतिपाद्यों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

2.2.1 प्रथम अध्याय का प्रतिपाद्य

प्रथम अध्याय में कुल दश खण्ड हैं। इसमें पढ़े गये मन्त्र उद्गाता के लिये हैं जो यश में उपयोगी हो जाते हैं। वे मन्त्र स्तोम स्वरूप हैं और उत्तर तृचों में हैं। स्तोम सम्पादन में साम समूहों को विधान किया जाता है। आवृत्तियुक्त वही साम स्तोम भेदों के रूप में माने जाते हैं। इसका प्रथम ब्राह्मण है

ॐ महन्मे वोचो भर्गो में वोचो यशो में वोच: स्तोमं मे वोचो भुक्तिं में वोच: सर्वं में वोचस्तन्मावतु तन्माविशतु तेन भुक्षिषीय।। (1/11 ताण्ड्य ब्राह्मण)।

इसमें मन्त्रों की प्रकृतिगामिता, विष्टुतियों की क्रतु में अड्गता, ऋत्विक वरण, मन्त्र सीमा प्रतिपादन, सोम स्पर्श, द्रोणकलश स्थापना, स्पर्श, सम्मार्जन, होम कर्म, आदित्य प्रेक्षणमन्त्र, औदुम्बरी स्थापन, सवनमन्त्र, षोडशि ग्रहण भक्षणमन्त्र, दधिभक्षणमन्त्र, अश्वसुदा सम्मार्जन मन्त्र, रथ्याग्रहण मन्त्र, दक्षिणामन्त्र, स्तोममन्त्र आदि पर विमर्श हुआ है।

2.2.2 द्वितीय व तृतीय अध्यायों का प्रतिपाद्य

द्वितीय अध्याया में 17 खण्ड और तृतीय अध्याय में 13 खण्ड हैं। इनमें त्रिवृत्स्तोमगत उधती, परिवर्तिनी, कुलायिनी, विष्टुतियों से उनके फल की प्रशंसा मिलती है। पञ्चदशस्तोम गत पञ्चपञ्चिनी विष्टुति का स्वरूप प्रशंसा वर्णित है। सप्तदश स्तोम की सभेद विष्टुतियाँ वर्णित हैं। एकविंशस्तोम की विष्टुतियाँ प्रतिपादित हैं उपर्युक्त द्वितीय अध्यायगत हैं। जबकि तृतीय अध्याय में त्रिनवस्तोम विष्टुति, त्रयदित्रंशस्तोम विष्टुतियाँ एवं उनसे मिलने वाले फल का प्रतिपादन हुआ है।

2.2.3 चतुर्थ व पञ्चम् अध्यायों का प्रतिपाद्य

चतुर्थ अध्याय में कुल दश खण्ड व पञ्चम अध्याय में दश खण्ड हैं। इनमें गवामयन क्रतु का सूक्ष्म रूप से वर्णन मिलता है। इसके आरम्भ में गावो वा एतत् सत्रमासत वासां दशसु मास्सु श्रृङ्गाण्यजायन् तदा। ………………….. (4/1/1)

चतुर्थ अध्याय में गवामयन का निर्वचन, 12 मास पर्यनत कर्तव्यता, इसका फल, इस सत्र की प्रथम दिवस की अतिरात्र संस्थाकता, पृष्ठ्यषऽहविधान और उसकी प्रशंसा की गयी है। द्वितीय

दिन की प्रायणीयता, 24 स्तोम विधान और उसकी प्रशंसा, माध्यन्दिन सवन, मासपञ्चकपर्यन्त अह: क्लृप्तिव वाहितप्रगाथ सम्पादन, षष्ठ मास में करणीय कार्य, स्तोम विधान, अनुष्ठानस्थान की प्रशंसा, विषुवद नामक हविर्धान, गवामयन का महाव्रत, शिरपक्षादि भेद से पञ्चविध होता के पृष्ठ का विधान, महाव्रत में स्तोमसाम का विधान, इलान्दाठय साम की कर्तव्यता, प्राण साम, आसन्दी पर आरूढ़ होकर सामगान, ब्राह्मण भोजनार्थ पाककर्म, माघकृष्णाष्टमी को गवामयन की दीक्षाकाल में दोष दर्शन कर चित्राशुक्ल एकादशी को दीक्षा काल निर्धारण आदि का वर्णन किया गया है।

2.2.4 षष्ठ, सप्तम, अष्टम व नवम अध्यायों का प्रतिपाद्य

षष्ठ अध्याय में 10 खण्ड, सप्तम अध्याय में 10 खण्ड, अष्टम अध्याय में दश खण्ड और नवम अध्याय में 10 खण्ड हैं। षष्ठ अध्याय में अग्निष्टोम की उत्पत्ति व प्रशंसा, गायत्री की उत्पत्ति, ब्राह्मण, राजन्य, वैश्य व शूद्रदि की उत्पत्ति, अग्निष्टोम का फल, उसको ज्योतिष्टोम पद से कहना, औदुम्बरी शाखा की स्थापना, द्रोणकलश की स्थापना, धारानुमन्त्रण, प्रवृत्तहोम विधान, प्रस्तरप्रहरण, वहिष्पवमान निरूपण, द्वियजमानक प्रयोग में विशेष कथन आदि वर्णित है। सप्तम अध्याय में प्रात: सवन उससे सम्बन्धित साम वर्णन हुआ है। अष्टम एवं नवम अध्याय में माध्यन्दिन सवन; सायं सवन तथा रात्रिकालीन प्रजा का विधान वर्णित है। 6ठें से 9वें पर्यन्त साम का विस्तृत वर्णन हुआ है।

2.2.5 दशम से पञ्चदश अध्यायों का प्रतिपाद्य

दशम अध्याय में 11 खण्ड, एकादश अध्याय में 11 खण्ड, द्वादश अध्याय में 13 खण्ड, त्रयोदश अध्याय में 12 खण्ड, 14वें अध्याय में 12 खण्ड और पन्द्रहवें अध्याय में 12 खण्ड हैं। इन अध्यायों में प्रथम दिन से लेकर दशम दिन तक के विधानों एवं सामों का विशिष्ट वर्णन मिलता है।

दशम अध्याय में द्वादशाहवात त्रिवृत्, पञ्चदश, सप्तदश, एकविंश, त्रिणव, त्रयस्त्रिंशादि स्तोम विधा; दशरात्र विषयक स्तोम व छन्द, द्वादशाहयज्ञ से मिलने वाली ऋद्धि, नवरात्र का विधान, अग्नि शब्द विभक्ति प्रदर्शन, पृष्ठम षऽह का साम निरूपण मिलता है।

एकादश अध्याय में द्वादशाह के अन्तर्गत किये जाने वाले प्रथम द्वितीय दिन के बहिष्पवमान की स्तोमभक्क्लृप्ति वर्णन, आज्यस्तोत्र, साम का वर्णन किया गया है। इसी अध्याय में द्वितीय दिवस में करणीय बहिष्पवमान तृचविधान, स्तोत्रीय सामविधान, उक्थ्यस्तोत्रों व सामों का विधान वर्णित है।

द्वादश अध्याय दाशरात्रिक के तृतीय दिवस के बहिष्पवमान विषयक स्तोम, स्तोत्र; माध्यन्दिन पवमान स्तोत्र व साम; आर्थवपवमान स्तोत्र साम; उक्थ्य स्तोत्रीय विधान वर्णित है। इसी अध्याय के 7वें से 13वें खण्ड पर्यन्त चतुर्थ दिवस के बहिष्पवमान, माध्यन्दिन पवमान व आर्थवपवमान विषयक स्तोत्र, साम; उक्थ्य स्तोत्र व षोडशिस्तोत्र वर्णित हैं।

त्रयोदश अध्याय में दशरात्रान्तर्गत पञ्चम दिवस के बहिष्पवमान, माध्यन्दिन पवमान और आर्थवपवमान में गाये जाने वाले तृच और सामों का विधान वर्णित है, इसी अध्याय में षष्ठ दिवस की पवमान विषयक सामविधियाँ प्रतिपादित हैं।

चतुदश अध्याय में सातवें और आठवे दिवस की पवमान विषयक स्तुतियाँ और साम विधियों का प्रतिपादन किया गया है।

पञ्चदश अध्याय में नवम दिवस एवं दशम दिवस के करणीय वहिष्पवमान, माध्यन्दिन पवमान व आर्थवपवमान विषयक सामविधियाँ व स्तुतियाँ प्रतिपादित की गयी हैं।

2.2.6 षोडश से एकोनविंश अध्यायों का प्रतिपाद्य

16वें अध्याय में 16 खण्ड, सप्तदश में 14 खण्ड, 18वें अध्याय में 11 खण्ड, 19वें अध्याय में 21 खण्ड हैं। इनमें अनेकों प्रकार के एकाहयज्ञों का वर्णन हुआ है।

षोडश अध्याय में ज्योति शब्द का निर्वचन, गवाढय, आप्रसञ्ज्ञक, अभिजित् विश्वजित, सर्वजित् एकाह विधि व साम-विधान वर्णित है। ज्योति, सर्वज्योति विश्वज्योति आदि वर्णित है। साधस्क्रा: पञ्च-यज्ञ वर्णित है।

सप्तदश अध्याय में चार व्रात्ययज्ञ, पाञ्च अग्निष्टुत यज्ञ, तीन त्रिवृत् स्तोम और चार चातुर्मास्य यज्ञ वर्णित है।

अष्टादश अध्याय में उपहव्य अनिरूक्त, ऋतपेय, वैश्यस्तोम, तीव्रसुत, वजपेय यज्ञों का स्तोत्र व साम प्रतिपादन हुआ है। इसी में राजसूय सम्बन्धित पवित्र, अभिषेचनीय, दशपेय, केशवपनीय और व्युष्टिद्विरात्र यज्ञों का प्रतिपादन है।

एकोनविंश अध्याय में राट, विराट, औपशद, पुस्तोम, चतुष्टोम, अन्य चतुष्टोम, उदिभत्, बलभित्, अपचिति प्रथम व द्वितीय, पक्षी, ज्योति, ऋषभ गोसव, मरुत्स्तोम, कुलाय, इन्द्रस्तोम, इन्द्राग्नि स्तोम, विधन प्रथम व द्वितीय यज्ञों के द्वन्द्वसोमों का क्रमश: विधान और प्रयुक्त सामों और स्तोमों की विधि वर्णित है। इसमें कुल 20 यज्ञों का विधान वर्णन मिलता है।

2.2.7 विंश से द्वाविंश अध्यायों का प्रतिपाद्य

विंश अध्याय में 16 खण्ड, एकविंश अध्याय में 15 खण्ड और द्वाविंश अध्याय में 18 खण्ड हैं। इनमें अहीन यागों का वर्णन है। इनमें त्रिवर्ण का अधिकार, एक, दो, तीन, चार आदि अनेक यजमानों से सम्पन्न किया जाता है दक्षिणा दी जाती है और अन्त में अतिरात्र संस्था होती है।

विंश अध्याय में 13 अतिरात्र (ज्योतिष्टोम, सर्वस्तोम, अप्तार्याम, नवसप्तदश, विषुवदतिरात्र, गोष्टोमतिरात्र, अभिजिदतिरात्र, विश्वजिदतिरात्र, त्रिवृदतिरात्र, पञ्चदशतिरात्र, सप्तदशातिरात्र, एकविंशतिरात्र, प्रथम खण्ड से दशम खण्ड तक वर्णित है। 20/11 से 13 खण्ड तक तीन द्विरात्र अहीन याग वर्णित है- (1) अङ्गिरसों का द्विरात्र, (2) चैत्ररथ द्विरात्र और (3) कापिवन द्विरात्र। 20/14 से 16 पर्यन्त गर्ग त्रिरात्र का प्रतिपादन किया गया है।

एकविंश अध्याय में तृतीय खण्ड पर्यन्त गर्ग त्रिरात्र का शेष अंश प्रतिपादित है। शेष 5 त्रिरात्र याग जो गर्ग त्रिरात्र से अतिरिक्त अश्वत्रिरात्र, वैदत्रिरात्र, छन्दोमपवमान, अन्तर्वसु और पशक की विधि वर्णित है। चार चतूरात्र याग (चतुर्वीर, जामदग्नय, वशिष्ठ और विश्वामित्र का संजय), तीन पञ्चरात्र (अभ्यासंग्य, पञ्चशारदीय और अन्तर्महाव्रत), अहीनयागों की विधि आदि वर्णित है।

द्वाविंश अध्याय में तीन षड् रात्र याग (ऋतुओं का षड् रात्र, त्रिकद्रुक व अभ्यासंग्य), सात सप्तरात्रि याग (सप्तर्षियों का सप्तरात्र, प्रजापति का सप्तरात्र, छन्दोमपवमान, जामदग्न्य, प्रजापति का अवधान, जनक सप्तरात्रि, पृष्ठयस्तोम) एक अष्टरात्र याग, दो नवरात्र याग (देवों का नवरात्र व अन्य नवरात्र) चार दशरात्र (त्रिककुप्, कौसुरुविन्द, अन्य कश्चित् व देवपुर) और एक एकादशरात्र पौण्डरीक याग की विधियाँ, स्तोम व फल का प्रतिपादन हुआ है।

2.2.8 त्रयोविंश से पञ्चविंश अध्यायों का प्रतिपाद्य

त्रयोविंश अध्याय में 28 खण्ड, चतुर्विंश अध्याय में 20 खण्ड और पञ्चविंश अध्याय में 18 खण्ड हैं। इनमें सत्रयागों का विशद वर्णन किया गया है।

त्रयोविंश अध्याय में त्रयोदशरात्र सत्र की विधि, तीन चतुर्दशरात्र सत्र की विधि, चार पञ्चदशरात्र सत्र की विधि, एक सप्तदशरात्र सत्र की विधि, अष्टादशरात्र सत्र, एकोनविंशतिरात्र सत्र की विधि व फल, द्वाविंशतिरात्र सत्र की विधि, त्रयोविंशतिरात्र सत्र विधि, दो चतुर्विंशति रात्र सत्र विधि, पञ्चविंशति से लेकर द्वाविंशद् रात्र पर्यन्त सत्रों की विधि व फल प्रशंसा का प्रतिपादन हुआ है।

चतुर्विंश अध्याय में तीन त्रयस्त्रिंशत् रात्र सत्र का विधान, साम ऋचाओं को विधान, समृद्धिफल देने वाले चतुस्त्रिंशद् रात्र सत्र का विधान, पञ्चस्त्रिंशद् रात्र, षड् त्रिंशत् रात्र, सप्तत्रिंशद् रात्र, अष्टात्रिंशत् रात्र सत्र की विधि प्रतिपादित है। अनन्त श्री जय फल वाले एकोनचत्वारिंशत् रात्र सत्र की विधि, परमराज्यप्रतिष्ठाफल वाले चत्वारिंशद् रात्र सत्र की विधि, विधृतिनाम वाले सात एकोनपञ्चाशद् रात्र सत्रों की विधियाँ, एकषष्टिरात्र सत्र की विधि, गवामयन नामक सवत्सरसाध्य सत्र विधि का सूक्ष्मतम प्रतिपादन है।

पञ्चविंश अध्याय में स्वर्ग के साधन आदित्यों की पृष्ठयायन विधि, अङ्गिरसों की अयन विधि, संस्तुतिक दृतिवातवान् की अयन विधि, कुण्डपायियों की अयन विधि, तपश्चितो की अयन नामक सत्रविधि, प्रजापति की द्वादश सम्वत्सर नामक सत्र विधि, षट्त्रिंशत् संवत्सर सत्र विधि (यह शक्त्यों की अयन विधि है), स्वर्ग की साधनभूत साध्य देवों की शतसम्वत्सर नामक सत्र की विधि और उसकी प्रशंसा वर्णित है। सहस्रसाव्य नामक सहस्रात्र नामक सत्र की विधि और फल् प्रतिपादित है। तीन सारस्वतसत्र विधि, दीक्षा आदि का वर्णन है। एकयजमान वोल दार्षद्वाढय इष्टि-अयन विधि और अवभृथ स्नान विधि प्रतिपादित है। तुरायणाढय-इष्ट्ययन विधि का प्रतिपादन किया गया है। इसी अध्याय के 15वें खण्ड में सर्पो की सत्र विधि, 16वें खण्ड में प्रजापति साधन स्वरूप त्रिसम्वत्सर साध्य सत्र की विधि व फल प्रशंसा प्रतिपादित है। सत्रहवें खण्ड में सर्वसमृद्धिदायक प्रजापति का सहस्रसम्वत्सर सत्र की विधि वर्णित है। अन्तिम 18वें खण्ड में सहस्रसम्वत्सर साध्य विश्वसृजाभयताढय सत्र की विधि, अधिकार प्रतिपादन वर्णित है।

विश्वसृजाययन सत्र का फल वर्णन करते हुए कहा गया है-

ब्रह्मण: सलोकतां सार्ष्टितां सायुज्यं गच्छन्ति य एतदुपयन्ति। (25/18/6 ताण्ड्य ब्राह्मण)

तदेतद् विश्वसृजां सहस्रसंवत्सरमेतेन वै विश्वसृज: सर्वाभृद्धिमार्ध्नुवन् सर्वाभृद्धिमृध्नुवन्ति य एतदुपयन्ति। (25/18/6 ताण्ड्य ब्राह्मण)

अभ्यास प्रश्न - 1

1. पच्चीस अध्यायों वाला ब्राह्मण है-
   - क. ताण्ड्य ब्राह्मण
   - ख. देवताध्याय ब्राह्मण
   - ग. आर्षेय ब्राह्मण
   - घ. उपनिषद् ब्राह्मण
2. 'ॐ महन्मे वोचो'- से प्रारम्भ हुआ है-
   - क. वंश ब्राह्मण
   - ख. सामविधि ब्राह्मण
   - ग. षड्विंश ब्राह्मण
   - घ. ताण्ड्य ब्राह्मण
3. उद्गाता के लिये विहित मन्त्रों का विमर्श ताण्ड्य के किस अध्याय में किया गया है-
   - क. 2
   - ख. 1
   - ग. 3
   - घ. 4
4. ताण्ड्य के दूसरे अध्याय व तृतीय अध्याय में वर्णित है-
   - क. त्रिवृत् आदि स्तोम
   - ख. अतिरात्र
   - ग. व्रात्ययज्ञ
   - घ. गवामयन
5. ताण्ड्य के किस अध्याय में गवामयन वर्णित है-
   - क. चतुर्थ अध्याय में
   - ख. पञ्चम अध्याय में
   - ग. उपर्युक्त दोनों में
   - घ. इनमें से कोई नहीं
6. षष्ठ अध्याय (ताण्ड्य ब्राह्मण) में कुल खण्ड हैं-
   - क. 16
   - ख. 10
   - ग. 20
   - घ. 18
7. ताण्ड्य ब्राह्मण के एकोनविंश अध्याय से वर्णित कुल यज्ञ हैं-
   - क. 10

ख. 20

ग. 05

घ. 30

8. सात सप्तरात्र में सम्मिलित यज्ञ है-

क. 07

ख. 04

ग. 06

घ. 08

9. ताण्ड्य ब्राह्मण में वर्णित सम्पूर्ण यज्ञों की संख्या है-

क. 178

ख. 106

ग. 150

घ. 110

10. पौण्डरीक याग है-

क. द्विरात्र याग

ख. त्रिरात्र याग

ग. नवरात्र याग

घ. एकादशरात्र याग

घ. ताण्ड्य 25वें अध्याय में

11. सर्वसत्र वर्णित है-

क. ताण्ड्य 23वें अध्याय में

ख. 24 वें अध्याय में

ग. 25वें अध्याय में

घ. ताण्ड्य 25वें अध्याय में

12. विश्वसृजामयन सत्र का फल है-

क. ब्रह्म की सलोकता

ख. ब्रह्म की सार्ष्टिता

ग. ब्रह्म की सायुज्यता

घ. उपर्युक्त सभी

2.3 ताण्ड्य ब्राह्मण का वैशिष्ट्य

ताण्ड्य महाब्राह्मण में साम और सोमयाग का मुख्यरूप से प्रतिपादन हुआ है। इसमें सामवेद संहिता से सम्बन्धित साम के प्रकार, नामकरण पर विचार मिलता है। वैखानस के द्वारा दृष्टसत्र

नामकरण की पद्धति इसी प्रकारा है। कुछ आख्यायिकाएँ भी मिलती हैं जो साम की महत्ता बताने वाली हैं। वात्ससाम विषयक आख्यायिकाओं में मेधातिथि के सापेक्ष वत्स के द्वारा देखा गया वात्ससाम जो इच्छाओं का पूरक होने से कामसनि नाम से विख्यात हुआ। ताण्ड्य 14/6/10 में एक आख्यायिका मिलती है जिसमें वीङ्क साम के द्वारा च्यवन ऋषि को यौवन प्राप्त होने का वर्णन किया गया है।

इसमें ब्रह्मवादियों के मतों में खण्डन पूर्वक स्वपक्ष स्थापना के सन्दर्भ मिलते हैं। ताण्ड्य ब्राह्मण के 18/1/11-12 में सन्दर्भ हैकि व्रात्य यज्ञ में अग्निष्टोम साम का विधान कुछ आचार्य 'देवो द्रविणोद्रा (सामवेद उत्तरार्चिक 7/1/10) पर और अन्य आचार्य अदर्शि मातु वित्तम्' (सामवेद उत्तरार्चिक 7/1/11) पर साम रखने के पक्षपाती हैं किन्तु ताण्ड्य द्रविणोदा पर साम विधान करता है। ताण्ड्य उस काल में रचा गया जब यज्ञ संस्था अपने परम उत्कर्ष की अवस्था में थी। यज्ञ ही मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिये पर्याप्त साधन थे।

इस ब्राह्मण में ब्रात्यों को उचित स्थान दिलाने के लिए व्रात्य यज्ञों को विहित किया गया है। प्रवासी एवं आचरण से हीन आर्यो को व्रात्य कहा गया है। चार व्रात्य यज्ञ 17वें अध्याय के 1-4 खण्डों में व्रात्यगण शिक्षकों के लिये प्रथम याग, निन्दितों के लिये द्वितीय याग, कनिष्ठों के लिये तृतीय याग और ज्येष्ठों के लिये चतुर्थ याग वर्णित है। इनमें देय दक्षिणाओं का 17/1/14 व 15 में वर्णन हुआ है-

"उष्णीषश्च प्रतोदशच ज्याहणोडश्च विपधश्च फलकास्तीर्ण: कृष्णशं वास: कृष्णवलसे अजिने रजतो निष्कस्तद् गृहपते:।" (17/1/14)

"वल्कातानि दामतूषाणीतरेषां द्वे द्वे दामनी द्वे द्वे उपनहौ द्विषं हितान्यजितानि।" (17/1/15)

ये ही व्रात्यधन है।

इस ब्राह्मण में भौगोलिक ज्ञान से भी जुड़ी जानकारी मिलती है। इस ब्राह्मण का भौगोलिक क्षेत्र कुरुक्षेत्र तथा सरस्वती मण्डल है जो स्वर्ग के समान माना गया है। कुरुक्षेत्र से नैमिशारण्य (नैमिषारण्य) तक का प्रदेश यज्ञभूमि के रूप में उल्लिखित है। इसमें सरस्वती नदी के विलुप्त स्थान 'विनशन- 25/10/1 और पुनरुद्गमन स्थान प्लक्ष प्रास्रवण- 25/10/16 का वर्णन हुआ है- सरस्वत्या विनशने दीक्षन्ते (25/10/1) व यदा प्लक्षं प्रास्रवणभागच्छन्त्योत्थानम् (25/10/21)। दृषवती नदी (25/10/17), दी गयी है, कारप चव देश यमुना नदी से सम्बन्धित 25/10/23 का वर्णन है। 14/3/13 में रोहित नदी के कूल प्रदेश की सूचना दी गयी है।

ताण्ड्य ब्राह्मण में लोकसिद्धार्थ अनुवाद को एवं न्यायसिद्धार्थ अवबोधक आभाणक वाक्यों की संख्या 184 है। उनमें से कुछ हैं- अन्तरिक्षायतना हि प्रजा: (4/8/13), नरो वै देवानां ग्राम: (6/9/2), यद्धि मनसाभिगच्छति तद्वाचा तदति (11/1/3), यद्धि पुत्रोऽशान्तं चरति पिता तच्छमयाति (7/9/4), अग्निरन्नाधस्य प्रदाता (17/9/2), भरतां प्रतिदण्डा ब्राह्मणा: (18/10/8), भेषजं वै देवानामथर्वान : (16/10/10), श्रीर्वै पशव: (16/1/14), यन्मनुव्याणां प्रत्यक्षं पद्दैवानां परोक्षमादि।

इस ब्राह्मण को लोकोक्तियों व मुहावरों का प्रवर्तक माना जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न - 2

1. ताण्ड्य महाब्राह्मण में प्रतिपादित है-
   - क. पुरुषमेध
   - ख. प्रवर्ग्य
   - ग. सोमयाग
   - घ. इनमें से कोई नहीं
2. तत्स ऋषि के द्वारा देखा गया साम है-
   - क. शाक्वर
   - ख. वात्स
   - ग. वैखानस
   - घ. इनमें से कोई नहीं
3. वीङ्क साम से कौन ऋषि युवान हुए-
   - क. अथर्वा
   - ख. वैखानस
   - ग. च्यवन
   - घ. पौण्डीर
4. व्रात्ययज्ञों की कुल संख्या है-
   - क. 2
   - ख. 3
   - ग. 6
   - घ. 4
5. व्रात्य धन का प्रतिपादन किया गया है-
   - क. 17/1/14 (ताण्ड्य) में
   - ख. 17/1/15 (ताण्ड्य) में
   - ग. उपर्युक्त दोनों में
   - घ. इनमें से कोई नहीं
6. विनशन स्थान किस नदी से सम्बन्धित है-
   - क. गङ्गा से
   - ख. यमुना से
   - ग. सरस्वती से
   - घ. इनमें से कोई नहीं

7. सरस्वती नदी का पुनरुद्गमन स्थान है-
   क. कारपचव
   ख. विदेह
   ग. प्लक्ष प्रास्रवण
   घ. इनमें से कोई नहीं
8. वैखानस द्वारा दृष्ट साम है-
   क. वात्स
   ख. वैखानस
   ग. शार्कर
   घ. प्रौढ़
9. 'अन्तरिक्षायतना हि प्रजा:' आया है-
   क. 4/8/13 ताण्ड्य
   ख. 7/8/1 ताण्ड्य
   ग. 7/9/4 ताण्ड्य
   घ. 11/1/3 ताण्ड्य
10. 'यद्धि मनसाभिगच्छति तद वाचा वदति' ताण्ड्य ब्राह्मण में वर्णित है-
   क. 11/1/3
   ख. 8/8/2
   ग. 2/2/1
   घ. 4/4/2

2.4 सारांश

ताण्ड्य महाब्राह्मण का मुख्यनाम प्रौढ़ है। पच्चीस अध्यायों वाला होने से इस पञ्चविंश व विपुल अध्यायों वाला होने से महाब्राह्मण और ताण्डि शाखा से सम्बन्धित होने से ताण्ड्य ब्राह्मण कहा गया है। इसमें यज्ञोपयोगी मन्त्र,त्रिवृत् आदि स्तोम, अहीन यागों, सत्रयागों जिनकी संख्या 178 है की विधि, फल, उनमें प्रयुक्त साम का सूक्ष्मतम वर्णन हुआ है इसमें सरस्वती, यमुना, दृषवती, नैमिशारण्य, कुरुक्षेत्र व मिथिला आदि की भौगोलिक जानकारी मिलती है। यह यज्ञसंस्कृति के उत्कर्ष का प्रकाशन करता है, यह आर्यों की यज्ञप्रियता का ख्यापक है। इसमें लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे भी देखने को मिलते हैं।

2.5 शब्दावली

क्रतु = जो यज्ञ आरम्भ के दिन से अनवरत 12 दिनों तक चलते रहते हैं वे क्रतु कहलाते हैं।

सत्र = 12 दिनों से अधिक दिनों तक चलने वाले याग सत्र कहे जाते हैं।

द्वादशाह = 12 दिनों तक चलने वाला याग।

स्तोम = यज्ञ निर्वाहक स्तुतिपरक गान मन्त्रों का समूह।

गवामयन = यह यज्ञ का नाम है जिसमें गौ को लाया जाता है।

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न क्र. 1 - 1. क, 2. घ, 3. ख, 4. क, 5. ग, 6. ख, 7. ख, 8. क, 9. क, 10. घ, 11. ग, 12. घ।

अभ्यास प्रश्न क्र. 2 - 1. ग, 2. ख, 3. ग, 4. घ, 5. ग, 6. ग, 7. ग, 8. ख, 9. क, 10. क

2.7 सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. ताण्ड्य महाब्राह्मणम्, (सायणाचार्य विरचित-भाष्य सहितम्) प्रथम व द्वितीय भाग-सम्पादक श्रीचिन्नस्वामिशास्त्री व पं. पट्टाभिरामशास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण-2078-2021।
2. वैदिक साहित्य और संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा संस्थान, वाराणसी, संस्करण-1980।
3. सामवेदीय ब्राह्मणों का परिशीलन, डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय, नाग प्रकाशन, दिल्ली।

2.8 बोध प्रश्न

1. ताण्ड्य महाब्राह्मण की प्रतिपाद्य विषयवस्तु को लिखिए।
2. ताण्ड्य के वैशिष्ट्य को लिखिए।

THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 दर्शपौर्णमास, इष्टि का परिचय एवं वैशिष्ट्य

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 दर्शपौर्णमास इष्टि का परिचय एवं वैशिष्ट्य

3.3 पौर्णमासेष्टि प्रक्रिया

3.3.1 उपवसथ दिवस के कृत्य

3.3.2 यजनीय दिवस के कृत्य

3.4 दर्शेष्टि प्रक्रिया

3.4.1 देवता एवं द्रव्य

3.4.2 वत्सापाकरण, सायंदोह

3.4.3 पिण्डपितृयज्ञ

3.5 दर्शपूर्णमासेष्टि सन्दर्भ

3.6 दर्शपूर्णमासेष्टि की सामग्री

3.7 दर्शपूर्णमासेष्टि का वैशिष्ट्य

3.8 सारांश

3.9 शब्दावली

3.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.11 सन्दर्भ-ग्रन्थ

3.12 बोध प्रश्न

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप-

- दर्शइष्टि के स्वरूप एवं प्रक्रिया आदि से परिचित होंगे।
- पौर्णमासेष्टि के स्वरूप एवं प्रक्रियादि से परिचित होंगे।
- यज्ञ मानव के नैतिक उत्थान में सहायक हैं, इसका बोध प्राप्त करेंगे।
- वैदिक संस्कृति के उदात्त पक्ष से परिचित होंगे आदि।

3.1 प्रस्तावना

वैदिक संस्कृति का प्रथम धर्म यज्ञ है जो सृष्टिनिर्माण व सञ्चालन में सहायक हैं। यज्ञ पाङ्क्त होता है अर्थात् इसमें पाँच अङ्ग देवता, द्रव्य, मन्त्र, ऋत्विज, और दक्षिणा होते हैं। वैदिक

वाङ्मय में तीन प्रकार की यज्ञ संस्थाएँ प्रतिपादित की गयी है- (1) पाकयज्ञ संस्था- इसमें औपसन होम, वैश्वदेव, पार्वण, अष्टका, मासिकश्राद्ध, श्रवणा और शूलगात्र में सात यज्ञ होते हैं। इनका सम्पादन गृह्य, आवसथ्य, औपासन अथवा स्मार्तअग्नि में किया जाता है। (2) हविर्यज्ञसंस्था- इसमें अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास्य, निरूपशुबन्ध, सौत्रमणी तथा पिण्डपितृयज्ञ ये सात यज्ञ होते हैं। (3) सोमसंस्था- इसमें अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, अतिरात्र, वाजपेय तथा आप्तोर्याम ये सात यज्ञ होते हैं। हविर्यज्ञसंस्था एवं सोमसंस्था के यज्ञ श्रौताग्नियोंगार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि तथा सभ्याग्नियों में सम्पन्न किये जाते हैं। दर्शपौर्णमासेष्टि श्रौताग्नि में सम्पन्न की जाने वाली हविर्यज्ञसंस्था के अन्तर्गत सम्पाद्य यज्ञ हैं। इसका प्रतिपादन शतपथ ब्राह्मण, गोपथ ब्राह्मणादि ग्रन्थों में हुआ है। यह अमावस्या एवं पूर्णिमा तिथि से सम्बन्धित यज्ञ है। इसे यावज्जीवन का 30 वर्षों तक प्रत्येक मास में अनवरत सम्पाद्य यज्ञ के रूप माना गया है। आगे इस पर विशेष विमर्श किया जायेगा।

3.2 दर्शपौर्णमास इष्टि का परिचय एवं वैशिष्ट्य

दर्शपूर्णमासेष्टि सभी इष्टियों की प्रकृति है। दर्शपूर्ण मासेष्टि दो इष्टियों की सम्मिलित सञ्ज्ञा है। 'दर्श' का अर्थ है अमावस्या; क्योंकि इस दिन चन्द्रमा को केवल सूर्य देख सकता है और कोई नहीं। अत: अमावस्या के दिन सम्पन्न की जाने वाली इष्टि दर्शेष्टि है। अमावस्या वह तिथि है जिस दिन सूर्य और चन्द्र में अत्यन्त सन्निकर्ष होता है- य: परम: सन्निकर्ष: साऽमावस्या। 'शतपथ' के अनुसार तद्यदेव एता रात्रिमिहा वसति तस्मादमावस्या नाम (1/6/4/5)। इस रात्रि को वह चन्द्रमा यहाँ साथ रहता है अत: इसका नाम अमावस्या है। गोपथ ब्राह्मण उत्तरभाग 1/10 के अनुसार चतुर्दशी विद्वा अमावस्या 'सिनीवाली' है इसे पूर्वा अमावस्या कहते हैं और जो उत्तरी अर्थात् जिसमें चन्द्रमा की कला न दिखाई पड़े वह कुहू अमावस्या है।

पूर्णिमा के दिन सम्पाद्य इष्टि पूर्णमासेष्टि है। पूर्णिमा वह तिथि है जब सूर्य एवं चन्द्रमा के बीच अत्यन्त विप्रकर्ष हो- य: परमो विप्रकर्ष: सूर्याचन्द्रमसो: सा पौर्णमासी। गोपथ ब्राह्मण उत्तरभाग 1/10 के अनुसार चतुथर्शी विद्या पूर्णिमा को अनुमति कहा गया है और जो उत्तरा (शुक्ल पञ्चदशी की पूर्णिमा है वह राका है। इष्टि वह याग है जिसका सम्पादन सपत्निक यजमान चार ऋत्विजों की सहायता से करता है। दर्शपूर्णमासेष्टि वह याग है जो सपत्निक यजमान चार ऋत्विजों के सहयोग से अमावस्या एवं पूर्णिमा तिथि को सम्पन्न करता है।

दर्शपूर्णमासेष्टि यज्ञ सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति व स्वर्ग की प्राप्ति के लिये किया जाता है। इसका सम्पादन अग्न्याधान करने के बाद यावज्जीवन, 30 वर्ष तक करने का विधान है, जिस अग्निहोत्री का पिता जीवित होता है वह चतुर्दशी को ही अग्न्युद्धरण और अग्न्याधान करता है और अमावस्या को दर्शयाग करता है। जिसके पिता का स्वर्गवास हो चुका हो वह अग्निहोत्री अमावस्या को पिण्डपितृयज्ञ और दूसरे दिन (शुक्ल प्रतिपदा तिथि) में दर्शयाग करता है। गोपथ ब्राह्मण उत्तर भाग 1/12 में दर्शपौर्णमासेष्टि में अग्नि, विष्णु, सरस्वती और सरस्वान् को चरु देने का विधान करता है। और वही 1/14 में व्रतपालक के लिये व्रत में स्त्रीगमन और मांसभक्षण का निषेध करता है। गोपथ ब्राह्मण उत्तर भाग 1/8 दर्शपौर्णमास यज्ञ के साथ ही सोम यज्ञ की सीमा दिखाने वाले हैं। दर्शपौर्णमासौ वै यज्ञस्य अवान दर्शौ। बिना दर्शपूर्णमासेष्टि किये सोम यज्ञ करने वाले का पतन होता है अर्थात् सभी सोमयज्ञ दर्शपूर्णमासेष्टि के साथ ही पूर्ण होने वाले हैं।

3.3 पौर्णमासेष्टि प्रक्रिया

दर्शपौर्णमासेष्टि में पूर्णमासेष्टि सम्पादन की प्राथमिकता है। अत: पूर्णमासेष्टि की प्रक्रिया एवं वैशिष्ट्य प्रस्तुत किया जा रहा है। अनन्तर दर्शेष्टि का प्रतिपादन होगा। पूर्णमासेष्टि दो दिन में सम्पाद्यमान है। प्रथम दिन पूर्णिमा का दिन उपवसथ दिन कहलाता है और द्वितीय दिन कृष्ण प्रतिपदा यजनीय दिन होता है। उपवसथ के दिन सपत्निक यजमान ससङ्कल्प ऋत्विजों के सहयोग पूर्वक अग्नयुद्धरण, अग्नि-अग्न्याधान एवं अग्निपरिस्तरण आदि करता है। यजनीय दिन में इध्मबर्हिराहरण तथा वेद निर्माण से लेकर इष्टि समाप्ति पर्यन्त सभी अनुष्ठानों का सम्पादन करता है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण कार्यो का सम्पादन एक दिन में भी किया जा सकता है ऐसी दशा में अग्निपरिस्तरण कार्य वेद निर्माण के पश्चात ही होता है।

पौर्णमासेष्टि में निम्लिखित प्रधानयाग विहित हैं-

1. आग्नेय अष्टाकपालक पुरोडाश याग
2. अग्निषोमीय उपांशु याग
3. अग्निषोमीय एकादशकपालक पुरोडाश याग

उपर्युक्त प्रधान यागों के अतिरिक्त अङ्ग यागों के रूप में प्रयाज और अनुयाज यागों को भी सम्पन्न किया जाता है।

3.3.1 उपवसथ दिवस के कृत्य

पूर्णमासेष्टि में सपत्निक यजमान पूर्णमासेष्टि का सङ्कल्प, अग्न्युद्धरण, अग्नि अग्न्याधान और अग्नि परिस्तरण कृत्य सम्पन्न करता है। उपवसथ दिवस के विषय में धारणा है कि यजमान के घर के समीप अथवा यजनशाला में इस दिन सभी देवता आकर निवास करते हैं। पूर्णमास दृष्टि में यह दिन पूर्णिमा का है। इस दिन यजमान सपत्निक पूर्णमासेष्टि का सङ्कल्प करता है।

अग्नि-उद्धरण - वृत अध्वर्यु प्रात:कालीन अग्निहोत्र के पश्चात् गार्हपत्य से आहवनीय एवं दक्षिणाग्नि को पृथक करता हुआ अग्नि-उद्धरण करता है। इसके लिए गार्हपत्य अग्नि से एक जलती हुई लकड़ी का प्रणयन कर मन्त्र उच्चारण द्वारा आहवनीय तथा दक्षिणाग्नियों को प्रज्ज्वलित करता है। यही आहवनीय तथा दक्षिणाग्नियों का प्रज्ज्वलन अग्नि-अन्वाधान है।

अग्नियों के चतुर्दिक अध्वर्यु द्वारा प्रैष दिये जाने पर आग्नीध्र ऋत्विज क्रमश: आहवनीय, गार्हपत्य एवं दक्षिणाग्नियों के चतुर्दिक कुशों को बिछाने को अग्निपरिस्तरण कहा जाता है। बिछाये जाते हुए कुशों का अग्रभाग प्रथमत: पूर्व की ओर पुन: पश्चिम दिशा की ओर करके बिछाया जाता हैं

3.3.2 यजनीय दिवस के कृत्य

यजनीय दिवस के कृत्यों में व्रतोपायन, बर्हिराहरण, इध्य आहरण, वेदनिर्माण, पात्रासादन, ब्रह्मा का वरण, प्रणीता-प्रणयन, हवि: निर्वाण, हति: प्रोक्षण, हविकण्डन, हवि-प्रेषण, कपलोपधान, पुरोडाशश्रमण, वेदिकरण एवं स्तम्बयजुहरण, पूर्व एवं उत्तर परिग्रह, प्रोक्षणी पात्रासाद बर्हि एवं इध्मासादन, स्रुक-सम्मार्जन, पत्नी-सन्नहन, इध्मप्रोक्षण, बर्हिप्रोक्षण, वेद-प्रोक्षण, बर्हि आस्तरव, परिधि-आधान, आज्य-आसादन, हवियों का आधान होतृषदन का निर्माण,

सामधेनी, अनुवचन, आधार, आहुति (पूर्णधाराहुति, अग्निसम्मार्जन एव उत्तर आधारआहुति ध्रुव समञ्जन प्रवर वरण, प्रमाज याग, आज्य आहुति, प्रधान याग, आग्नेय पुरोडाश याग, उपांशु याग (अग्निषोमीय पुरोडाश याग पार्वण होम, स्विष्टकृद् याग, प्राशित्र-हरण, इडाकर्म, अनुयाज, सुवव्युदूहन, परिधि-संयाज, समष्टियजु र्होम फलीकरव होम, प्रायश्चित्ताहुति कर्म सम्पादित किये जाते हैं। (इसका विवेचन कृपया डॉ. रामहित त्रिपाठी द्वारा लिखित 'वाराहश्रौतसूत्र का परिशीलन' ग्रन्थ में देखना चाहिए।)

इसके अतिरिक्त प्रो. युगल किशोर सम्पादित माध्यन्दिन-शतपथ ब्राह्मणम् की भूमिका पृष्ठ 58-59 पर वर्णित कार्यकलाप जो पौर्णमासयाग का है, अग्रलिखित है-

(1) सङ्कल्प, (2) ऋत्विक्वरण, (3) ब्रह्मावरण, (4) प्रणीता प्रणयन, (5) प्रात्रासादन, (6) शूर्णग्निहोत्रहवणीप्रतपन, (7) हविर्ग्रहण, (8) पवित्रकरण, (9) पात्रप्रोक्षण, (10) हवि: प्रेषण, (11) हवि: कण्डन, (12) वितुषीकरण, (13) कपालोपधान, (14) हवि: पेषण, (15) उपसर्जन अधिश्रमण, (16) हतिराधिश्रमण, (17) अङ्गुलि प्रक्षालन, (18) आप्त्योदक निनयन, (19) अन्वाहग्रश्रमण, (20) वेदिनिर्माण, (21) स्तम्बयजुर्हरण, (22) पात्र सम्मार्जन, प्रतपन, (23) इध्य प्रोक्षण, (24) वेदिस्तरण, (25) बर्हिप्रोक्षण, (26) प्रस्तरग्रहण, (27) वेदिस्तरण, (28) परिधिनिधान, (29) इध्माधान, (30) इधमस्थापन, (31) स्रुचीस्थापन, (32) हविशसादन, (33) होतृषदनकरण, (34) सामधेनं अनुवचन, (35) अग्निसम्मार्जन, (36) पूर्वाधार हवन, (37) होतृवरण, (38) पञ्चप्रयाज, (39) आज्यभाग, (40) प्रधानयाज, (41) स्विष्टकृद याग, (42) प्राशित्रहरण, (43) इडावदान, (44) चतुदर्धाकरण, (45) इडोपह्वान, (46) इडाप्राशन, (47) इडामार्जन, (48) अत्वाहार्यप्रदान, (49) अग्निसम्मार्जन, (50) तीन अनुयाज, (51) स्रुकव्यूहन, (52) सूक्तवाक्, (53) शंमुवाक, (54) परिधिप्रक्षेप, (55) संसृतहोम, (56) पत्नीसंयाज, (57) पत्नीवाचन, (58) दक्षिणाग्निहोम, (59) समष्टियजुर्होम, (60) बर्हिहोम, (61) प्रणीताविमोक, (62) कणापसन, (63) पूर्णपालनिनयन, (64) व्रतविसर्जन, (65) याजमानकर्म, (66) ब्राह्मण तर्पण, (67) यज्ञेश्वरार्पण, (68) ब्राह्मण भोजन।

ये सम्पूर्ण कार्यकलाप 1924 में प्रकाशित दर्शपूर्णमासप्रकाश: द्वारा श्रीराम दीक्षित में सबसे पहले वर्णित हैं।

3.4 दर्शेष्टि प्रक्रिया

दर्शयाग का अनुष्ठान पूर्णमास याग की विधियों के ही समान सम्पादनीय है; इस याग में कुछ स्वतन्त्र अनुष्ठानों का भी विधान किया जाता है-

3.4.1 देवता एवं द्रव्य

दर्शेष्टि में प्रधान यागों एवं अङ्ग-यागों के देवताओं एवं द्रव्यों का विधान निम्नलिखित है- दर्शेष्टि मे सम्पाद्य प्रधान याग हैं- (1) ऐन्द्राग्न द्वादशकपालक पुरोडाश, (2) ऐन्द्राग्न अथवा ऐन्द्रसन्नाय्य एवं (3) वैष्णव उपांशु याग। दर्शेष्टि के अङ्ग याग हैं- (1) आग्नेय आज्य भाग, (2) सौम्य आज्य भाग एवं (3) आग्नेय पुरोडाश स्विष्टकृत् इत्यादि। इनके इतर दर्शेष्टि में बर्हि आहरण कृत्य क पूर्व व्रत-ग्रहण न कर तत्सापाकरण के पूर्व करने का विधान है।

3.4.2 वत्सापाकरण, सायंदोह

तत्सापारकण के पूर्व अहिताग्नि यजमान शमी वृक्ष अथावा पलाश वृक्ष की शाखा का आहरण करता है, जो पत्तों वाली पूर्व वा उत्तर दिशा की ओर हों और जिनका अग्रभाग सूखा न हो, अध्वर्यु उक्त शाखा को दर्भपिञ्जल के साथ ग्रहण कर उसी के द्वारा 6 बछड़ों को उनकी माताओं से पृथक करता है, गायों को चरने के लिए छोड़ देता है, चरने के उपरान्त लौटाई गयी गायों को अध्वर्यु इन्द्र देवतार्थ सान्नाद्य बनाने के लिये बछड़ों को पिलाता है। अनन्तर गोदोहन करता है। इसी तरह महेन्द्र याजियों द्वारा भी बछड़ों को पिलाकर सान्नीद्य हेतु दूध दूहने का विधान है। असोमयाजी यजमान को सान्नाद्य हवि बनाना ही नहीं चाहिए।

सायंदोह कृत्य का सम्पादन सान्नद्य हवि बनाने के लिए किया जाता है, इसमें सायंकालीन अग्निहोत्र के अनन्तर यजमान गार्हपत्य अग्नि के उत्तर में दर्भ आस्तरण कर उसी पर सान्नाद्य के लिये पात्रासादन करता है और गाय का समन्वक एवं निर्मन्त्रक तीन-तीन बार दोहन किया जाता है, अनन्तर दधि या दूध जो हो अथवा एक दिन पूर्व का रखा होता है को दुहे गये दूध में मिलाकर दूध को पुन: गर्म किया जाता है। इसका विधान इन्द्र तथा महेन्द्र के लिये किया जाता है।

3.4.3 पिण्डपितृयज्ञ

जिस यजमान के पिता का स्वर्गवास हो चुका हो वह अग्निहोत्री अमावस्या को पिण्डपितृयाग और दूसरे दिन शुक्ल प्रतिपदा तिथि को दर्शयाग करता है। दर्शेष्टि में पितरों को पके हुये चावलों का पिण्ड प्रदान किया जाता है। अत: इस कर्म की याज्ञिक भाषा में 'पिण्डपितृयज्ञ' सञ्ज्ञा है। पिण्डै: पिण्डदानेनसहित: पितृभ्यो देवेभ्यो यज्ञो होम: स पिण्डपितृयज्ञ: (सत्याषाढ श्रौतसूत्र महादेव टीका (2/7/245)। इसका अनुष्ठान अमावस्या के दिन अपराह्ण काल में प्रारम्भ किया जाता है। अध्वर्यु पूरब से दक्षिण की ओर एक उल्मुक का प्रलयन करता है। वह उत्तर से अग्नि ग्रहण कर उसे दक्षिण में रखता है। अनन्तर अध्वर्यु दक्षिणाग्नि का परिस्तरण करके यज्ञीय पात्रों का आधान करता हुआ क्रमश: उल्मल, मुसल, कृष्णाजिन, शूप, भेक्षण, एवं चरु आदि का आधान करता है। तदनन्तर बिना कटे हुये बर्हि से एक पवित्र का निर्माण कर उससे प्रोक्षणी प्रोक्षणी पात्र का निर्मन्त्रक शुद्धीकरण करता है तथा अन्यपात्रों का प्रोक्षण करता है। अध्वर्यु अग्निष्इ में से चरुओं के निमित्त ब्रीहि का निर्तापन करता है। तदनन्तर ब्रीहि को कृष्णाजिन पर रखकर पूर्व एवं दक्षिण की ओर मुख करके पत्नी कूटती है। अध्वर्यु फलीकरण के अनन्तर दक्षिणाग्नि पद जीवतण्डुल के लिए चावलों को पकाता है। इसके बाद पके हुए चावलों को ग्रहण कर घृत अथवा नवनीत से अभिधारण करके उसे दक्षिण से लेकर स्फ्य के द्वारा प्रोक्षण करता है। स्फ्य को आस्तृत कर चरु भेक्षण एवं पिण्ड निधान आदि को क्रमश: एक-एक बर्हि पर रखता है। तदनन्तर पितरों का आवाहन किया जाता हैं इसके लिये अध्वर्यु यज्ञोपवीती होकर मेक्षण के द्वारा अग्नि में तीन आहुतियाँ प्रदान करता है। पहली आहुति से कुछ दूरी पर अग्नि दक्षिणार्थ में द्वितीय आहुति को देने का विधान है। इसके बाद उदकलेप एवं भेक्षण आदि को अग्नि में डाल देते हैं।

यजमान पितरों के आह्वान-काल में जल से तीन बार उत्पवन कर पुन: तीन बार पात्रों पर जल सींचता है। अध्वर्यु तीन अञ्जलि जल को लेकर उसे बर्हि की जड़ में डालता है। तदनन्तर बर्हि पर तीन पिण्डों को दक्षिण से एक-एक करके रखते हुए क्रमश: पिता, पितामह, और प्रपितामह

का नाम लेता है। यदि इस समय पितरों का नाम अज्ञात हो तो मन्त्र के द्वारा पिण्ड-निधान करणीय है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि जीवित पिता, पितामह के नाम पिण्ड-निधान नहीं किया जा सकता है।

पिण्डदान के अनन्तर स्थापित पिण्डों पर अध्वर्यु घृताक्तन की गयी शलाकाओं को रखता है तथा प्रत्येक पिण्ड का अभ्यञ्जन करता है। अध्वर्यु पिण्डों को उन पर स्थापित कर शेष पिण्डों देखते हुए उत्तर में रखता है तथा कुशों पर तीन अञ्जलि जल और की ओर छिड़ककर पुन: अञ्जलि को बाँधतो है। इस समय वह पितरों के लिये मन्त्रपाठ करता है। शेषभाग को सूँघता है। शेष भाग का विकल्प स्वरूप अन्नाद्य कामी द्वारा भक्षण किये जाने का भी विधान है। मध्यपिण्ड को यजमान की पत्नी खा जाती है।- मध्यमं पिण्डं पत्नी प्राश्नीयात् (वाराहश्रौतसूत्र-1/2/3/136)। दूसरे पिण्डों को अग्नि में डाल दिये जाने अथवा ब्राह्मणों को खिला देने या जल में ले जाकर छोड़ देने का विधान है। इसके अनन्तर पात्रों को दो-दो कर उनका अभ्युक्षण करके ले जाते हैं।

ज्ञातव्य है कि अनाहिताग्नि यजमान द्वारा भी पिण्डपितृयज्ञ का अनुष्ठान किये जाने का विधान है, किन्तु अनाहिताग्नि यजमान द्वारा प्रयुक्तव्य हवि का पाक-कर्म औपासन अग्नि में ही करना चाहिए। औपासन अग्नि की स्थापना गार्हपत्य अग्नि से उद्धृत अङ्गारों द्वारा की जाती है। उसी पर आहुति करन का विधान है।

दर्शेष्टि के शेष अनुष्ठानों की सम्पूर्ण विधि पूर्णमासेष्टि के समान ही करणीय है- समानं दर्शपूर्णमासयोर्विधानम् (वाराह श्रौतसूत्र - 1/1/1/56)।

3.4 दर्शपूर्णमासेष्टि सन्दर्भ

दर्शपूर्णमासेष्टि हविर्याग संस्था के अन्तर्गत अनुष्ठीय यज्ञ है इस यज्ञ का सिद्धान्त पक्ष शतपथ ब्राह्मण के दशम काण्ड प्रथम अध्याय पञ्चम ब्राह्मण, एकादश काण्ड प्रथम अध्याय से अध्याय आठ अध्याय पर्यन्त वर्णित है। गोपथ ब्राह्मण के उत्तरभाग के प्रथम प्रपाठक की पञ्चम कण्डिका से पञ्चदश कण्डिका पर्यन्त पौर्णमास विषयक विधि वर्णित है।

श्रौतसूत्रों में ऋग्वेदीय आश्वालयन श्रौतसूत्र एवं शाङ्खायन श्रौतसूत्रों में श्री पौर्णमासेष्टि की प्रयोग प्रक्रिया वर्णित है, आश्वालयन श्रौतसूत्र के प्रथम अध्याय में और शाङ्खायन श्रौतसूत्र के प्रथम अध्याय में दर्शपूर्ण मासेष्टि की प्रक्रिया वर्णित है।

कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के आपस्तम्ब श्रौतसूत्र के प्रथम प्रश्न से लेकर चतुर्थ प्रश्न तक दर्शपौर्णमास एवं याजमान वर्णित है। इसी शाखा के हिरण्यकेशिन अपश्राम सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र में 1/1 में दर्शपौर्णमास याग प्रतिपादित है। इसी शाखा के भारद्वाज श्रौतसूत्र के प्रथम प्रश्न में दर्शपौर्णमासेष्टि वर्णित है। इसी शाखा के वैखानस श्रौतसूत्र में प्रश्न 3-7 में दर्शपौर्णमासेष्टि वर्णित है। कृष्णयजुर्वेदीय मैत्रायणी शाखा के वाराह श्रौतसूत्र के अध्याय 2-3 में पूर्णमासेष्टि प्रक्रिया विस्तार से वर्णित है।

अथर्ववेदीय वैत्तानश्रौतसूत्र में भी प्रथम अध्याय में दर्शपौर्णमासेष्टि वर्णित है।

अन्य श्रौतसूत्रों ताधूल, मानव, काठक लाद्यायन, जैमिनि एवं द्राहयायण में दर्शपौर्णमासेष्टि सन्दर्भ अनेवषणीय है।

शुक्लयजुर्वेदीय कात्यायन श्रौतसूत्र में भी दर्शपूर्ण मासेष्टि के सन्दर्भ मिलते हैं।

सामविधानब्राह्मण के तृतीय अनुललक में भी दर्शपौर्णमासयाग का वर्णन मिलता है।

3.5 दर्शपूर्णमासेष्टि की सामग्री

दर्शपूर्णमासेष्टि की सामग्री दर्शपूर्णमासप्रकाशक में व माध्यन्दिन शतपथब्राह्मणम की भूमिका पृष्ठ 59 पर दी गयी है वह यहाँ लिखी जा रही है-

शूर्प, अग्निहोत्रहवणी, स्फ्य (वज्र), कपालआग्नय 8, कपाल अग्निषोमीय 11, शम्या, कृष्णाजिन, उलूखल, मुसल, दृषत्, उपल (सिलबट्टा), पात्री, हविर्द्रव्य (पत्र या बीहि), पवित्र, धृष्टि, संयवनोदक, आज्यस्थाली, आज्य, वेद (कुशमुष्टि), अन्वाहर्यदक्षिणा, अभि, इध्मा 18, बर्हि (दर्भ) स्रुव, जुहू, उपभृत, ध्रुवा, प्रशित्रपात्रो, श्रृतावदान पुरोडाशपात्री, योक्त, सूनकुशा, परिधि 3, होतृपीठ, दर्भ, इडापत्री, षड्क्तपात्र, अन्तर्धान कट और पूर्णपात्र।

यज्ञ में प्रयुक्त पात्रों के चित्रों को देखने के लिए आचार्य श्रीराम शर्मा सम्पादित- यजुर्वेद संहिता का परिशिष्ट-4, यज्ञीय व्यक्ति, पदार्थ, पात्र-परिचय देखना चाहिए।

3.6 दर्शपूर्णमासेष्टि का वैशिष्ट्य

यह एक प्रकृतियाग है जो सपत्निक यजमान के इहलौकिक एवं पारलौकिक कामनाओं का पूरक है। देवताओं से लेकर पितरों तक को प्रसन्न करता है। मनुष्य को संयमी एवं सत्यव्रती, नियम पारायण, बनाता है। दर्शेष्टि में गोदोहनादि कर्म गौ पालन एवं रक्षण को भी पुरस्कृत करता है। व्यक्ति यावज्जीवन अपना आध्यात्मिक एवं चारित्रिक उन्नयन करे इसकी सिद्धि कराता है। इस यज्ञ के करने उपरान्त ही मनुष्य सोमयागों में अधिकार प्राप्त करता है। यह सृष्टि सञ्चालन में सहायक यज्ञ है। स्वकल्याण से लोककल्याण की प्रेरणा देता है।

अभ्यास प्रश्न - 1

1. 'दर्श' शब्द वाचक है-
   - क. अमावस्या का
   - ख. पूर्णिमा का
   - ग. दोनों का
   - घ. इनमें से कोई नहीं
2. पूर्णमास वाचक है-
   - क. पूर्णिमा का
   - ख. अमावस्या का
   - ग. दोनों का
   - घ. इनमें से कोई नहीं
3. दर्शपौर्णमासेष्टि सम्पादन है-
   - क. 30 वर्षों तक

ख. यावज्जीवन

ग. उपरोक्त दोनों विकल्प

घ. इनमें से कोई नहीं

4. दर्शपूर्णमासेष्टि है-

क. हविर्याग संस्था

ख. पाकयज्ञ संस्था

ग. सोमयाग संस्था

घ. इनमें से काई नहीं

5. पौर्णमासेष्टि में नहीं सम्पाद्य है-

क. आग्नेय अष्टाकपालक पुरोडाश याग

ख. अग्निषोमीय उपांशु याग

ग. अग्निषोमीय एकादश कपालक पुरोडाश याग

घ. पिण्डपितृयज्ञ

6. अग्निपरिस्तरण है-

क. अग्नि से आहवनीय को प्रज्ज्वलित करना

ख. कुशाओं का बिछाया जाना

ग. गार्हपत्य से अग्नि को निकालना

घ. विकल्प क एवं ग दोनों

7. दर्शेष्टि में प्रधान याग है-

क. ऐन्द्राग्न द्वादश कपालक पुरोडाश

ख. ऐन्द्राग्न अथवा ऐन्द्रसान्नाद्य

ग. वैष्णव उपांशु याग

घ. उपर्युक्त सभी

8. सायंदोह कृत्य का सम्पादन होता है-

क. अग्न्युद्धरण के लिये

ख. अग्निहोत्र के लिये

ग. सान्नाद्य हवि बनाने के लिये

घ. इनमें से कोई नहीं

9. शतपथ ब्राह्मण के एकादश काण्ड में वर्णित याग है-

क. दर्शेष्टि

ख. पूर्णमासेष्टि

ग. दर्शपूर्णमासेष्टि

घ. पितृमेध

10. गोपथ ब्राह्मण के किस भाग में दर्शपौर्णमासेष्टि वर्णित है-

क. पूर्वभाग में

ख. उत्तरभाग में

ग. उपर्युक्त दोनों

घ. इनमें से कोई नहीं

11. गोपथ ब्राह्मण में दर्शपूर्णमासेष्टि में चरु देने का विधान है-

क. अग्नि को

ख. विष्णु और सरस्वती को

ग. सरस्वान् को

घ. उपर्युक्त सभी

12. उलूखल का प्रयोग होता है-

क. पितृमेध में

ख. सर्वमध में

ग. दर्शपौर्णमासेष्टि में

घ. अश्वमेध में

3.7 सारांश

प्रिय विद्यार्थियों! इस इकाई का सारांश है कि दर्शपूर्णमासेष्टि सपत्निक यजमान द्वारा ऋत्विजों की सहायता से सभी कामनाओं को पूरा करने के लिये नियमपूर्वक अमावास्या और पूर्णिमा से सम्बन्धित पितरों के साथ ही देवताओं के प्रीत्यार्थ किया जाने वाला यावज्जीवन वा 30 वर्षों तक सम्पाद्य यज्ञ है। बिना इस यज्ञ के सम्पादन के सोमयज्ञ करने का अधिकार ही मनुष्य को नहीं है। यह यज्ञ लोक-परलोक में कामनाओं को पूरा करता है एवं सृष्टियज्ञ को संचालित करने के लिये मानव मात्र को प्रेरित करता है। यह वस्तुत: मानव मात्र का धर्म है।

3.8 शब्दावली

दर्श = वह तिथि जिसमें सूर्य एवं चन्द्रमा में अत्यन्त सन्निकर्ष होता है। यह अमावस्या तिथि का वाचक है।

पूर्णमास = वह तिथि जिसमें चन्द्रमा वा मास पूर्ण होता है। इस दिन सूर्य और चन्द्रमा में अत्यन्त विप्रकर्ष होता है, यह पूर्णिमा तिथि है।

इष्टि = सपत्निक यजमान द्वारा चार ऋत्विजों से सम्पाद्य याग है।

अग्न्युत्ऋरण = गार्हपत्याग्नि से यजमान को अध्वर्यु द्वारा अग्नि को निकालना (पृथक करना)।

अग्नि-अन्वाधान = अध्वर्यु ऋत्विज का पृथककृत अग्नि से आहवनीय और दक्षिणाग्नि को

प्रज्ज्वलित करना।

अग्निप्ररिस्तरण = आग्नीय ऋत्विज का आहवनीय एवं दक्षिणाग्नियों के चतुर्दिक कुशा बिछाना।

उपवसथ = देवताओं का यज्ञशाला में निवास करना।

पिण्डपितृयज्ञ = पितरों को पके हुये चावलों का पिण्डदान करना।

स्फ्य = खादिर वृक्ष के काष्ठ से बना हुआ, अरतिन पात्र। लम्बा एवं खड्ग की आकृति वाला वह उपकरण है, जिसका प्रयोग वेदि परिलेपन आदि में किया जाता है।

चमस् = दण्डरहित चम्मच की सञ्ज्ञा समस् है जो रौहीतक अथवा न्यग्रोध वृक्ष के काष्ठ से बनाया जाता है। इसके दश प्रकार निम्नलिखित हैं-

अच्छावाक चमस, आग्नीध्र चमस, उद्गातृ चमस, नेष्टृ चमस, पोतृ चमस, प्रशास्तृ चमस, ब्रह्म चमस, ब्राह्मणच्छंसी चमस, यजमान चमस व होतृ चमस।

3.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न क्र. 1 - 1. क, 2. क, 3. ग, 4. क, 5. घ, 6. ख, 7. घ, 8. ग, 9. ग, 10. ग, 11. घ, 12. ग।

3.10 सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. दर्शपूर्णमास प्रकाश:, श्रीराम दीक्षित, प्रकाशक-आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली ग्रन्थाङ्क-93, संस्करण 1824।
2. शतपथब्राह्मणम् (तीन भागो में) सम्पादक-डॉ. जीत राम भट्ट, इस्टर्न बुक लिङ्कर्स, दिल्ली, भारत, संस्करण- 2009।
3. माध्यन्दिन शतपथब्राह्मणम् (हिन्दी व्याख्या- दर्शपूर्णमास पद्धतिसमलङ्कृतम्) प्रथमो भाग:, सम्पादक व व्याख्याकार- प्रो. युगुल किशोर मिश्र:, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय:, वाराणसी।
4. वाराह श्रौत-सूत्र का परिशीलन, डॉ. रमहित त्रिपाठी, मङ्गलम् प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2003।
5. गोपथ ब्राह्मणभाष्यम्- अनुवादक- श्री पण्डित क्षेमकरणदास त्रिवेदी, सम्पादिकाएँ- डॉ. प्रज्ञा देवी एवं मेधा देवी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 436014, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, संस्करण पुनर्मुद्रित- 2020।
6. यजुर्वेद संहिता, सम्पदक- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, व भगवती देवी शर्मा, प्रकाशक, ब्रह्मवर्चस, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार, उ.प्र., संस्करण-2020।
7. वैदिक कोश - हंसराज, प्रथम संस्करण, लाहौर, 1921।
8. वैदिक कोश - डॉ. सूर्यकान्त, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

9. श्रौतपदार्थ निर्वचन-विश्वनाथ्ज्ञ शास्त्री, द्वितीय संस्करण, बनारस-1919।

10. वैदिक साहित्य और संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा संस्थान, वाराणसी, संस्करण-1980।

11. दर्शपौर्णमास पद्धति- पण्डित भीमसेन शर्मा व युधिष्ठिर मीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट, हरियाणा संस्करण-2011।

3.11 बोध प्रश्न

1. दर्शेष्टि क्या है? इसकी प्रक्रिया लिखिये।

2. पूर्णमासेष्टि क्या है? इसकी प्रक्रिया लिखिये।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 प्रवर्ग्य, पुरुषमेध, सर्वमेध, के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतिपादित सृष्टि रहस्य

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 प्रवर्ग्य स्वरूप विमर्श

4.3 पुरुषमेध याग स्वरूप विमर्श

4.3.1 पुरुषमेध का प्रयोजन व निर्वचन

4.3.2 पुरुषमेध याग प्रक्रिया

4.3.3 पुरुषमेध याग में दक्षिणा

4.3.4 पुरुषमेध के अन्त में कृत्य

4.3.5 पुरुषमेध का आधिदैवत व सृष्टियज्ञ पक्ष

4.4 सर्वमेध याग स्वरूप विमर्श

4.4.1 सर्वमेध याग का प्रयोजन व निवर्चन

4.4.2 सर्वमेध याग प्रक्रिया

4.4.3 सर्वमेध याग में दक्षिणा

4.4.4 सर्वमेध याग के अन्त में कृत्य

4.4.5 सर्वमेध याग का आध्यात्मिक वा सृष्टियज्ञ पक्ष

4.5 सारांश

4.6 शब्दावली

4.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.8 सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

4.9 बोध प्रश्न

4.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

- प्रवर्ग्य यज्ञ का स्वरूप आवश्यक सम्भार, प्रक्रिया व तज्जन्य फल से परिचित होंगे।
- पुरुषमेध याग का स्वरूप, प्रक्रिया, फल व एतत् विषयक सृष्टिरहस्य को जान पायेंगे।
- सर्वमेध याग का स्वरूप, प्रक्रिया फल व एतद् विषयक सृष्टिरहस्य को जान पायेंगे।
- यज्ञ की श्रेष्ठता व सृष्टिमयता के बोध में दक्ष हो जायेंगे।

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में सोमयाग पूर्व किये जाने वाले प्रवर्ग्य कृत्य का साङ्गोपांङ्ग विमर्श, पुरुषमेध की सविस्तार प्रक्रिया, सर्वमेध का स्वरूप सृष्टिषियक रहस्य विमर्श होगा। यज्ञ ही श्रेष्ठ कर्म है। प्रजाति द्वारा सञ्लित सृष्टि यज्ञ में उपर्युक्त याग अपनी-अपनी विशिष्टता रखते हैं, यह तथ्य ही इस इकाई में विशिष्ट रूप से प्रतिपादित है।

4.2 प्रवर्ग्य स्वरूप विमर्श

यह सोमयाग से पूर्व सम्पादद्यमान कृत्य है। प्रवर्ग्य विषयक सन्दर्भ, शतपथ, ऐतरेय ब्राह्मणों में आपस्तम्ब, बौधायन, कात्यायन आदि श्रौतसूत्रों में अलग-अलग प्राप्त होते हैं। उन्हीं के आलोक में इसका स्वरूप विमर्श प्रस्तुत है-

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार प्रवर्ग्य के अनुष्ठान से यजमान को माना एक दैवी शरीर की प्रप्ति होती है, इस कृत्य में मिट्टी, पूतीक अजादुग्ध (बकरी का दूध), गवेधुक (जल के समीपवर्त्ती महातृणों के शुक्ल पुष्प) इन सामग्रियों से महावीर संज्ञक पात्रों का निर्माण किया जाता है। यह पात्र एक हाथ ऊँचा, ओखली के आकार का, गर्तयुक्त तथा मेखला से तीन अंगुल ऊँचाई वाला होता है। इसी प्रकार दो अन्य महावीर पात्रों का भी निर्माण किया जाता है। तदनन्तर अध्वर्यु इन पात्रों को अग्नि में पकाता है और अजादूध से सींचता है। गार्हपत्य तथा आहवनीय के उत्तर की ओर दो खर (18 अंगुल के समचतुरस और 1 अंगुल ऊचे) बालू से बनाकर और उन्हें सभड् आसब्दी तथा आहवर्णय के पूर्व की ओर रखकर वहाँ दो महावीर पात्र रखता है। तदनन्तर मूंज के कूर्चों को जलाकर उन्हें दोनों परों में रखकर, उसमें प्रमुख महावीर पात्र स्थापित कर लेता है, और होता के मन्त्रपाठ सहित प्रत्येक प्रणव पर औदुम्बरी स्रुवा से आज्य डालते हैं। महावीर, पिन्वन (दो दुग्ध पात्र) तथा रौहिण नामक दो पुरोडाश गार्हपत्याग्नि से प्रज्लित गोबर की अग्नि (किन्तु कुछ के मत में दक्षिणाग्नि) में पकाये जाते हैं। प्रथम दाहिने रौहिण पुरोडाश का हवन करके, गौ को दुहकर और परीशासों (सन्देशकों) द्वारा प्रमुख महावीर पात्र को लाकर उसमें अजादुग्ध डालते हैं और दुग्ध के बैठ जाने पर उसमें गौ का दुग्ध डालते हैं। यही 'धर्म' कहा जाता है।

अभ्यास प्रश्न - 1

1. 'प्रवर्ग्य के अनुष्ठान से दिव्य शरीर की प्राप्ति होती है' यह कथन है-
   - क. शतपथ ब्राह्मण में
   - ख. ऐतरेय ब्राह्मण में
   - ग. गोपथ ब्राह्मण में
   - घ. कौषीतकि ब्राह्मण में
2. महावीर पात्र का प्रयोग होता है-
   - क. पुरुषमेध में
   - ख. सर्वमेध में
   - ग. अप्तोर्याम में

घ. प्रवर्ग्य में

3. अजादुग्ध व गोदुग्ध से धर्म निर्माण किया जाता है-
   - क. पितृमेध में
   - ख. प्रवर्ग्य में
   - ग. पुरुषमेध में
   - घ. इनमें से कोई नहीं
4. प्रवृञ्जन कर्म होता है-
   - क. अश्वमेध में
   - ख. पितृमेध में
   - ग. प्रवर्ग्य में
   - घ. पुरुषमेध में
5. शतपथ के अनुसार प्रवर्ग्य का अनुष्ठान किया जाता है-
   - क. कुरुक्षेत्र में
   - ख. नैमिषारण्य में
   - ग. मिथिला में
   - घ. पाञ्चाल में
6. प्रवर्ग्य में यजन होता है-
   - क. आदित्य का
   - ख. चन्द्रमा का
   - ग. वरुण का
   - घ. मरुत को
7. 'महावीर सूर्य है' किसका वचन है-
   - क. कौषीतकि ब्राह्मण का
   - ख. ताण्डय ब्राह्मण का
   - ग. आपस्तम्ब का
   - घ. इनमें से कोई नहीं
8. किस यज्ञ के पात्र अन्त में पुरुषाकार में सजाये जाते हैं-
   - क. पुरुषमेध में
   - ख. पितृमेध में
   - ग. प्रवर्ग्य में
   - घ. इनमें से कोई नहीं

4.3 पुरुषमेध याग स्वरूप विमर्श

4.3.1 पुरुषमेध का प्रयोजन व निर्वचन

पुरुषमेध यज्ञ पुरुषनारायण सर्तोपरिता की कामना से पञ्चरात्र में सम्पन्न करके सर्वोपर बन गया। इस यज्ञ से अतिष्ठा (सर्वोपरिता) की प्राप्ति होती है। इस यज्ञ के अधिकारी ब्राह्मण व राजन्य हैं।

शतपथ ब्राह्मण में पुरुषमेध का निम्नलिखित निर्वचन किया गया है- ये लोक ही पू: (पुरी) हैं और इसमें जो गति करता है, लोकों में स्थित अन्न उसका मेधस् है, अत: वह पुरुषमेध है अथवा इसमें मेध्यपुरुषों को आलभन (ग्रहण-प्राप्ति) किया जाता है, अत: यह पुरुषमेध है। (13/6/21)।

4.3.2 पुरुषमेध याग प्रक्रिया

कात्यायन श्रैत सूत्र के अनुसार पुरुषमेध में 23 दीक्षाएँ, 12 उपप्रसाद, तथा 5 सुत्याएँ होती हैं; यही चालीस दिन में सम्पन्न होने वाला यज्ञ है। इसको चैत्र शुक्ल दशमी से आरम्भ किया जाता है।

दीक्षाओं और उपसदों के बाद सुत्याओं का आरम्भ किया जाता है- प्रथम दिवस अग्निहोत्र, द्वितीय दिवस में उक्थ्य, तृतीय दिवस में अतिरात्र, चतुर्थ दिवस में उक्थ्य तथा पञ्चम दिवस में अग्निष्टोम किया जाता है। (शतपथ ब्राह्मण- 13/6/1/8)। इस यज्ञ में 11 यूप गाड़े जाते हैं; उपवसथ-दिवस पर अग्निषोमीय पशु भी 11 होते हैं। एक पुरोडाश होता है। सुत्या के तीसरे दिन अतिरात्र सोमयाग का अनुष्ठान होता है। उस दिन प्रत्येक यूप में 11-11 पशुओं का नियोजन किया जाता है। अग्निष्ठ मध्यम यूप में ब्रह्मादि देवताओं के लिए ब्राह्मणदि 48, द्वितीय यूप में ब्रह्मादि देवताओं के लिए अनुरुधादि 11, तृतीय यूप में मर्यादादि देवताओं के लिए प्रश्नविभागादि 11, चतुर्थ यूप में आदि देवताओं के दार्ताहारादि 11, पञ्चम् यूप में वैरहत्यादि देवताओं के लिए पिशुनादि 11, षष्ठ यूप में योगादि देवताओं के लिए योकल्यादि 11, सप्तम् यूप में परिवत्सरादि देवताओं के लिये अविजितादि 11, अष्टम् यूप में परादि देवताओं के लिए मार्गाशदि 11, नवम् यूप में पश्चादोषादि देवताओं के ग्लाव्यादि 11, दशम् यूप में आस्कन्दादि देवताओं के लिये सभास्थाण्वादि 11 और एकादश यूप में महसादि देवताओं के लिये वीणावादादि 11 परुषरूप पशु नियोजित होते हैं। इसके अतिरिक्त द्वितीय उच्छित यूप में नृत्तादि देवताओं के लिये वीणानादादि 14; और अतिदीर्घ, अतिह्रस्व, अतिस्थूल, अतिकृश, अतिशुक्ल, अतिकृष्ण, अतिकुल्व, अतिलोमश इन 8 विरूप एवं अशूद्र तथा अब्राह्मण प्राजापत्य तथा मागध, पुंरचली, कितब, क्लीव इन 4 अशूद्र तथा अब्राह्मण प्राजापत्य- इस प्रकार 26 पशुओं का और नियोजन किया जाता है। पहले 11 को मिलाकर इस यूप में नियुक्त पशुओं की संख्या 37 हो जाती है। सभी यूपों में पशुओं की सम्मिलित संङ्ख्या 184 होती है।

4.3.3 पुरुषमेध याग में दक्षिणा

पुरुषमेध या में आरम्भ में सूर्य देवता को होम दिया जाता है और अन्त में सूर्योपस्थान है। शतपथब्राह्मण (13/6/2/18-19) में पुरुषमेध यज्ञ की दक्षिणा को बताया गया है- पुरुषमेध में दक्षिणा अश्वमेध की तरह होती है भेद यह है कि अश्वमेध में पुरुष भी दक्षिणा में दिये जाते हैं।

अश्वमेध में सुत्या दिवसों की सन्ध्या तीन होने से दिग्विजय से विभिन्न दिशाओं से प्राप्त द्रव्य का प्रतिदिन तृतीय-तृतीय भाग दक्षिणा स्वरूप प्रदान किया जाता है, जबकि पुरुषमेध में सुत्यादिवसों की सङ्ख्या 5 होने से प्राच्यादि दिशाओं से आनीत द्रव्य का दक्षिणा स्वरूप प्रदेश अंश प्रतिदिन पञ्चम्-पञ्चम् होता है। यह व्यवस्था राजन्य यजमान के लिये है। यदि पुरुषमेध याग ब्राह्मण करे तो वह सर्वस्व दक्षिणा देवे।

4.4.4 पुरुषमेध के अन्त में कृत्य

पुरुषमेध यज्ञ सम्पन्न करके यजमान को अन्त क्या करना चाहिए? इसके विषय में कात्यायन श्रौत सूत्र का आदेश है-

"यजमान आत्मा में अग्नियों का समारोपण करके और सूर्य का उपस्थापन करके अरण्य में चला जाये अर्थात् सन्यास ले ले; दूसरे घर में निवास करे (21/1/17-18)।

4.4.5 पुरुषमेध का आधिदैवत व सृष्टियज्ञ पक्ष

शतपथ (13/6/1-11) में पुरुषमेध के आधिदैविक और आध्यात्मिक स्वरूप कीर्ति है। तत्पश्चात् याज्ञिक प्रक्रिया का। पुरुषमेध यज्ञ का आधिदैविक जगत् और आध्यात्मिक व्याख्यान में तात्पर्य है, यह स्पष्टरूप से ज्ञात होता है। आधिदैवत पक्ष में नारायण आदित्य पुरुष है, और ये लोक ही उसका मेध है (शतपथ- 13/6/1/9) समस्त पशुयज्ञों में पशुओं को बाँधने के लिए यूप होता है। पुरुषमेध में भी बाँधने के लिए यूप होता है। पुरुषमेध में भी पशुओं के लिए यूप का निर्देश मिलता है। अश्वादि पशुओं के लिए यूप के निर्देश मिलता है। अश्वादि पशुओं को तो यूप बाँधना उचित है,जिससे वे यज्ञशाला से भाग न जावें। परन्तु पुरुष तो निर्देश के अनुसार कार्य करने वाले होते हैं, अत: उनको यूप में अन्य पशुओं के समान रस्सी से बाँधना उचित नहीं है, पुरुषमेध के आधिदैविक स्वरूप में पुरुष = नारायण आदित्य है, लोक लोकान्तर मेध अन्न है। सृष्टि यज्ञ में आदित्यरूप यूप में रश्मिरूपी रस्सी से लोक-लोकान्तर बँधे हुए है, अत: पुरुषमेध के याज्ञिक स्वरूप में यूप की आवश्यकता है, और लोकरूप पुरुष के बन्धन की भी। परन्तु यह अन्य पशुओं के समान बन्धन नहीं है, सांकेतिक बन्धन है। लोक में बहिन भाई के हाथ में राषीरूप प्रेमसूत्र बाँधकर उसे जैसे बाँधती है, वैसा ही पुरुषमेध में पुरुषों का बन्धन-यूप का निर्देश करके समीप बैठाना मात्र जानना चाहिए। क्योंकि अश्वमेध में कपिञ्जल आदि आरण्य पशुओं का यूपों के अन्तराल (माध्यदिन पृषतान्तांस्त्रयोदेश तपोदेश यूपान्तरेषु (कात्यायन श्रौतसूत्र- 20/6/6)। इस पर महीधर ने लिया है- भानश्रौत में इनके बन्धन का उपाय इस प्रकार कहा है- नाड़ी में प्लुषि- यशकादि को, करण्ड-पिहारे में सर्पो को, कटघरे में मृगव्याघ्रादि को जलयुक्त धड़ों में मत्स्यादि को जाल में पक्षियों को, कारागार में हाथियों को और नौका में उदकोत्पन्नों को रखें। (महीधरभाष्य यजुर्वेद 24/20)। - श्रौतयज्ञ मीमांसा पृष्ठ 204-205)।

विशेष- इस पुरुषमेध का विशेष विवरण दे डाले के लिये शतपथ ब्राह्मण के 13वें काण्ड के 6 अध्याय के 1 ब्राह्मण, 2 ब्राह्मण को पढ़ें व कात्यायन श्रौतसूत्र के नवें अध्याय की प्रथमा कण्डिका पढ़े और श्रौतयज्ञमीमांसा ग्रन्थ से सम्बन्धित अंश पढ़ें।)

अभ्यास प्रश्न - 2

1. पञ्चरात्र यज्ञ है-
   क. पितृमेध
   ख. पुरुषमेध
   ग. प्रवर्ग्य
   घ. अश्वमेध
2. मेध्यपुरुषों का आलभन होता है-
   क. प्रवर्ग्य
   ख. दर्शपौर्णमास में
   ग. पुरुषमेध में
   घ. इनमें से कोई नहीं
3. पुरुषमेध याग में कुल दीक्षाएं होती हैं-
   क. 20
   ख. 17
   ग. 23
   घ. 12
4. पुरुषमेध में कुल सुत्याएँ होती हैं-
   क. 6
   ख. 7
   ग. 5
   घ. 4
5. चैत्रशुक्ला दशमी से प्रारम्भ होता है-
   क. पितृमेध
   ख. पुरुषमेध
   ग. सर्वमेध
   घ. अश्वमेध
6. 12 उपसद वाला याग है-
   क. प्रवर्ग्य
   ख. अश्वमेध
   ग. सर्वमेध
   घ. पुरुषमेध

7. पुरुषमेध में किस सुत्या दिवस को अतिरात्र किया जाता है-
   - क. प्रथम
   - ख. द्वितीय
   - ग. तृतीय
   - घ. पञ्चम
8. पुरुषमेध में सभी यूपों में पशुओं की कुल सङ्ख्या होती है-
   - क. 102
   - ख. 184
   - ग. 109
   - घ. 108

4.5 सर्वमेध याग स्वरूप विमर्श

4.5.1 सर्वमेध याग का प्रयोजन व निवर्चन

सर्वमेध याग ऋग्वेदीय पुरुषसूक्त के सर्वहुत यज्ञ से सम्बन्धित है। इस यज्ञ का अनुष्ठान ब्राह्मण का राजन्य यजमान श्रेष्ठता, स्वाधिपत्य की प्राप्ति अथवा सभी कामनाओं की पूर्ति के लिए करें- ऐसा ब्राह्मण वचन है।

सत्याषाढ़ एवं शांखायन श्रौतसूत्रों के वचनों को आधार मानकर सर्वमेध का अर्थ है- वह यज्ञ जिसमें सबकुछ की प्राप्ति के लिये सबका हवन किया जाता है तथा सभी प्राणियों में स्वयं को आहुत करके सभी भूतों को सर्वमेध (प्रजापति) में आहुत करता है- सर्वं जुहोति सर्वस्याप्त्यै (सतयाषाढ़ श्रौतसूत्र 14/26) सर्वेषु भूतेषु आत्मानं हत्वा सर्वाणि भूतानि सर्वमेधे जुहावाङ् करोति (शांखायन श्रौतसूत्र 15/1)।

4.5.2 सर्वमेध याग प्रक्रिया

सर्वमेध सोमयाग है। सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति के लिए ब्राह्मण वा राजन्य इसका अधिकारी है। इस याग में 12 दीक्षा, 12 उपसद तथा 10 सुत्या दिवस होते हैं। इस प्रकार यह यज्ञ 34 दिनों में पूर्ण होता है। इस यज्ञ में दश सुत्या दिवसों में ही प्रमुख अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं अत: इसे दश-रात्र याग भी कहा जाता है। दश सुत्या दिवसों में सम्पन्न होने से यह यज्ञ विराट् प्रजापति से साम्य रखता है। क्योंकि विराट् में दश अक्षर होते हैं यही पूर्णान्त है।

सर्वमध यज्ञ के पहले दिन अग्निष्टुत नामक अग्निष्टोम सोमयाग होता है, दूसरे दिन इन्द्रस्तुत, तीसरे दिन, सूर्य स्तुत और चौथे दिन वैश्वदेवस्तुत नामक उक्थ्य सोमयाग किये जाते हैं। अग्नि, इन्द्र, सूर्य और वैश्वदेव ये सभी सर्वदेव माने गये हैं। पाँचवे व छठे दिन आश्वमेधिक और पौरुषमेधिक यज्ञ किये जाते हैं। सातवें दिन सभी यज्ञों की प्राप्ति के लिए अप्तोर्याम नामक सोमयाग किया जाता है, आठवें दिन त्रिणवस्तोम अर्थात् 27 स्तोमों की इष्टि तथा नवें दिन 33 स्तोमों की इष्टि की जाती है और अन्तिम 10वें दिन विश्वजित् नामक सर्वपृष्ठ अतिरात्र सोमयाग सम्पन्न किया जाता है।

4.5.3 सर्वमेध याग में दक्षिणा

इस यज्ञ में दक्षिणा पुरुषमेध (पूर्व खण्ड में वर्णित) के अनुसार ही दी जाती है। यदि यजमान राजन्य हो तो ब्राह्मण की भूमि को, सम्पत्ति को छोड़कर पूर्वी दिशायी पुरुषों सहित भूमि होता को और उत्तर दिशा की भूमि को उद्गाता की दक्षिणा के रूप में देता है। अन्य ऋत्विक् उन्ही में से अपना-अपना भाग ग्रहण करते हैं। परन्तु ब्राह्मण यजमान अपना सर्वस्व धन दक्षिणा में दे। (शतपथ ब्राह्मण-13/7/1/3)।

4.5.4 सर्वमेध याग के अन्त में कृत्य

शाख्यायन श्रौतसूत्र (16/1), मनुस्मृति (6/38) के अनुसार सर्वमेध याजी आत्मा में अग्नियों को आरोपित करके सर्वदा के लिए गृहत्याग करे और अरण्य में चले जाये अर्थात् सन्यास ले ले।

4.5.5 सर्वमेध याग का आध्यात्मिक वा सृष्टियज्ञ पक्ष

सर्वमेध में सर्वपद आध्यात्मिक भी है। सर्वपद प्रजापति का वाचक है- सर्वम् ब्रह्म प्रजापति: (शतपथ ब्राह्मण, प्रजापति रेव सर्वम् कौषीतकि ब्राह्मण 6/15)। महाभाष्यकार पतञ्जलि ने कहा है- सर्वस्य सर्वनामम सञ्ज्ञाक्रियते। सर्वश्च प्रजापति:। प्रजापतिश्च क (अष्टाध्यायी- 42/25) पर भाष्य) अर्थात् सर्व की सर्वनाम सञ्ज्ञा की जाती है। प्रजापति सर्व पदवाच्य है और प्रजापति के पद से भी वाच्य है। कस्मै देवाय हविषा विधेम् (ऋग्वेदीय हिरण्यगर्भसूक्त) में कस्मै पद से प्रजापति को बतलाया गया है। वही सर्वपद वाच्य है। अत: सर्वमेध याग वस्तुत: प्रजापति, सर्व सम्बन्धित याग है। इसी प्रजापति ने सृष्टि के आरम्भ में एक से अनेक होने की कामना की और सृष्टि यज्ञरूप श्रेष्ठतम कर्म में स्वयं को आहुत कर अपने चतुर्थांश को नानारूपात्मक जगत् के रूप में प्रकट किया (प्रजापतिर्वा इदमग्र आसीदेक एव शतपथ ब्राह्मण-7/5/2/6), प्रजापतिर्वा ऽअतीमाँल्लोकाँश् चतुर्थस्तत् प्रजापतिमेव चतुर्थ्याप्नोति (शतपथ ब्राह्मण-4/6/1/4)। चतुर्थांश में सृष्टि है यही रहस्य ऋग्वेदीय पुरुष सूक्त - 10/90/4 मन्त्र में सव्रप्रथम उद्घाटित हुआ है-

तिपादूर्ध्व उदैत्पुरुष: पादोऽस्येहाभवत् पुन:।
ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि।

सर्वमेध में आया हुआ मेध पद स्थावर-जङ्गम प्राणियों, सब प्रकार के अन्नों तथा याज्ञिक पशुओं का वाचक माना गया है। शतपथ ब्राह्मण में अन्यत्र पुरुष, अश्व, गो, अवि और अज इन पाँच पशुओं को ही सर्व कहा गया है-

अन्नं वै प्रजापति: पशुर्वा अन्नम् (शतपथ-5/1/3/7), सर्वे वै पशव: प्रजापति: पुरुषोऽश्वो गौविरज: (शतपथ-10/2/1/1), पुरुषोऽश्वो गौविरजो भवन्ति। एतावन्तो वै सर्वे पशवोऽन्नम् (शतपथ-6/1/2/239)। इनसे ऐसा प्रतीत होता हैकि इन्हीं पाँच पशुओं का आलभन (स्पर्श) होने के कारण इसका नाम सर्वमेध रखा गया है। यह विशेष ध्यातव्य है कि सभी मेध्य पशु प्रजापति से अभिन्न हैं। इस प्रकार इस यज्ञ का मेध = अन्न = यज्ञपशु भी स्वयं प्रजापति है और वही अग्नि है। गोपथ ब्राह्मण के अनुसार अन्न ही सभी प्राणियों की आत्मा है (अन्नं वै सर्वेषां भूतानामात्मा)। अत: इस यज्त्र में याजक, हविर्द्रव्य, अग्नि, ऋत्विक् और देवता सभी प्रजापति विश्वकर्मा हैं।

उपर्युक्त विवेचन का निष्कर्ष है, "सर्वमेध वह यज्ञ है, जो सृष्टि के आदि में प्रजापति के द्वारा सर्ग-रचना एवं संहार के लिये प्रवर्तित होता है। यह यज्ञ प्रजापति द्वारा सम्पादित आदि सृष्टि या का प्रतीक है।

विशेष- सर्वमेध के विषय में विशेष ज्ञान के लिए शतपथ ब्राह्मण 13 काण्ड, 7 अध्याय, प्रथम ब्राह्मण को व कात्यायन श्रौतसूत्र के 21वें अध्याय की द्वितीया कण्डिका पढ़ें व प्रो. राजेश्वर मिश्र का निगमलोक ग्रन्थ का सम्बन्धित अंश पढ़ें।

अभ्यास प्रश्न - 3

1. सर्वमेध याग ऋग्वेद के किस सूक्त से सम्बन्धित है-
   - क. वाक्सूक्त
   - ख. नासदीय सूक्त
   - ग. पुरुषसूक्त
   - घ. इनमें से कोई नहीं
2. सर्वहोमात्मक याग है-
   - क. पुरुषमेध
   - ख. सर्वमेध
   - ग. पितृमेध
   - घ. इनमें से कोई नहीं
3. दशरात्रि यज्ञ है-
   - क. दर्शपूर्ण
   - ख. पितृमेध
   - ग. सर्वमेध
   - घ. इनमें से कोई नहीं
4. 12 दीक्षा, 12 उपसद् और दश सुत्या दिवस वाला याग है-
   - क. सर्वमेध
   - ख. अप्तोर्याम
   - ग. पुरुषमेध
   - घ. इनमें से कोई नहीं
5. प्रजापति से साम्य रखता है-
   - क. पितृमेध
   - ख. पुरुषमेध
   - ग. सर्वमेध
   - घ. इनमें से कोई नहीं

6. त्रिण्वस्तोम इष्टि सर्वमेध याग किस सुत्या दिवस में सम्पन्न होती है-

   क. 8वें

   ख. 9वें

   ग. 6वें

   घ. 5वें

7. सर्वपद से वाच्य पशुओं में नहीं है-

   क. पुरुष

   ख. अश्व, गौ

   ग. अवि, अज

   घ. व्याघ्र

8. 'सर्वश्च प्रजापति:' यह वचन आया है-

   क. महाभाष्य में

   ख. ऋग्वेद में

   ग. आपस्तम्ब में

   घ. इनमें से कोई नहीं

4.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई का सारांश है- प्रवर्ग्य सूर्य से सम्बन्धित सोमयाग से पूर्व का कृत्य है। जिसमें महावीरपात्रादि का प्रयोग होता है। पुरुषमेध और सर्वमेध याग वस्तुत: सृष्टियज्ञ के प्रतीक हैं। इन्हें सम्पन्न करने वाला मुख्यत: सन्यास ले लेता है और गौणत: अपने घर में निवास करता है। सर्वमेध में सर्वपद आध्यात्मिक भी है। सर्वपद प्रजापति का वाचक है- सर्वम् ब्रह्म प्रजापति: (शतपथ ब्राह्मण, प्रजापति रेव सर्वम् कौषीतकि ब्राह्मण 6/15)। महाभाष्यकार पतञ्जलि ने कहा है- सर्वस्य सर्वनामम सञ्ज्ञाक्रियते। सर्वश्च प्रजापति:। प्रजापतिश्च क (अष्टाध्यायी- 42/25) पर भाष्य) अर्थात् सर्व की सर्वनाम सञ्ज्ञा की जाती है। प्रजापति सर्व पदवाच्य है और प्रजापति के पद से भी वाच्य है। कस्मै देवाय हविषा विधेम् (ऋग्वेदीय हिरण्यगर्भसूक्त) में कस्मै पद से प्रजापति को बतलाया गया है। निष्कर्ष है- "सर्वमेध वह यज्ञ है, जो सृष्टि के आदि में प्रजापति के द्वारा सर्ग-रचना एवं संहार के लिये प्रवर्तित होता है। यह यज्ञ प्रजापति द्वारा सम्पादित आदि सृष्टि या का प्रतीक है। सर्वमेध के विषय में विशेष ज्ञान के लिए शतपथ ब्राह्मण 13 काण्ड, 7 अध्याय, प्रथम ब्राह्मण को व कात्यायन श्रौतसूत्र के 21वें अध्याय की द्वितीया कण्डिका पढ़ें व प्रो. राजेश्वर मिश्र का निगमलोक ग्रन्थ का सम्बन्धित अंश पढ़ें।

4.7 शब्दावली

वाल्मीकवपा = चीटियों द्वारा निकाली गयी मिट्टी

गवेधुक = जल के समीपवर्त्ती महातृणों के शुक्ल पुष्प

महावीर = एक पात्र का नाम जो एक हाथ ऊँचा, ओखली के आकार का गर्तयुक्त तथा

मेखला से तीन अंगुल ऊचाई वाला होता है।

पिन्वन = एक पात्र जिसमें दुग्ध रखा जाता है।

धर्म = महावीर पात्र में अजादुग्ध के बैठ जाने पर गो दुग्ध डालने पर उत्पन्न अन्न विशेष को धर्म कहा जाता है।

प्रवृञ्जन = महावीर पात्र में दुग्ध डालने को प्रवृञ्जन कहा जाता है।

सुत्या = सोमाभिषव को सुत्या कहते हैं

दीक्षा = याग निमित्तक किया गया सङ्कल्पात्म कर्म

सर्वमेध = सब कुछ की प्रप्ति के लिये सब कुछ का हवन किया जाना

अग्निष्टोम = अग्नि का स्तवन करना

4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न क्र. 1 - 1. ख, 2. घ, 3. ख, 4. ग, 5. क, 6. क, 7. क, 8. ग

अभ्यास प्रश्न क्र. 2 - 1. ख, 2. ग, 3. ग, 4. ग, 5. ख, 6. घ, 7. ग, 8. घ

अभ्यास प्रश्न क्र. 3 - 1. ग, 2. ख, 3. ग, 4. क, 5. ग, 6. क, 7. घ, 8. क

4.9 सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. शतपथ ब्राह्मण, सम्पादक डॉ. जीतराम भट्ट, 3 भाग, प्रकाशक, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, जवाहर नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2009
2. श्रौतयज्ञ मीमांसा, युधिष्ठिर मीमांसक, श्रीमती सावित्री देवी वागड़िया ट्रस्ट, 170 जी ब्लॉक, न्यू अलीपुर कलकत्ता, जुलाई सन् 1987
3. कात्यायनश्रौतसूत्रम्, श्रीमत् कर्काचार्य विरचितभाष्य सहितम् प्रथम व द्वितीय भाग, पं. नेने गोपालशास्त्री व पं. डोगरा अनन्तराम शास्त्री (संशोधक व टिप्पणीकर्त्ता), जयकृष्णदास हरिदास गुप्त, चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, विद्याविलास प्रेस, बनारस सिटी-1996
4. निगमालोक, प्रो. राजेश्वरमिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद
5. वेद-विमर्श, प्रो. मान सिंह, प्रकाशक-निर्मल पब्लिशिंग हाउस, कुरुक्षेत्र, प्रथम संस्करण-2021
6. यजुर्वेद संहिता- सम्पादक पं. श्रीरामशर्मा आचार्य भगवती देवी शर्मा, ब्रह्मवर्चस शन्तिकुञ्ज हरिद्वार, उ. प्र., 1993
7. ऐतरेय ब्राह्मण- सम्पादक सुधाकर मालवीय, तारा प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी-1986

4.10 बोध प्रश्न

1. प्रवर्ग्य यज्ञ का विस्तृत वर्णन कीजिए
2. पुरुषमेध यज्ञ का विस्तार से वर्णन कीजिए
3. सर्वमेध यज्ञ को परिभाषित कीजिए।